।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन। राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण

मार्गशीर्ष कृ.१३ युगाब्द ५११९, वि.२०७४

१६ नवंबर २०१७

वर्ष ३३ : अंक १५

अपनी बात

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

पिछले दिनों जयपुर में प्रांत के घोष बजाने वालों का शिविर तथा शिविर के समापन पर सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ। दोनों को स्वर-गोविन्दम् नाम दिया गया। सार्वजनिक समापन समारोह के पूर्व घोष के स्वयंसेवकों का पथ-संचलन भी निकला। यह जयपुर-वासियों के लिये कभी न भूलने वाला अनुभव था। इस अंक में हम स्वर गोविन्दम् की संक्षिप्त जानकारी दे रहे हैं। शेष स्तम्भ यथावत हैं ही

सामग्री कैसी लगी यह हमें अुण-डाक (ई-मेल) या पत्र द्वारा अवश्य बतायें। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी। तब तक के लिए,

जय श्रीराम।

आपका

सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष	₹ 100/-
पन्द्रह वर्ष	₹ 1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)

सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334

Website: www.Patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

राष्ट्र-नायकों का अपमान बन्द होना चाहिये

वर्षों पहले हॉलीवुड की दो फिल्में आईं थीं, 'टेन कमाण्डमेण्ट्स' तथा 'बेनहर'। भव्यता में इनसे टक्कर लेने वाली फिल्म शायद ही कोई और बनी हो। पहली फिल्म में मूसा (मोजेज) की दर्शनीय गाथा है तथा दूसरी फिल्म में ईश-दूत ईसा का चमत्कारिक प्रभाव दर्शाया गया है। जार्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन आदि राष्ट्रनायकों पर भी हॉलीवुड में फिल्में बनी हैं। सभी में अमरीका और यूरोप के श्रद्धाकेन्द्रों का भव्य चित्रण किया गया है। दूसरी ओर भारत के फिल्मकार हैं जो अपने राष्ट्र-नायकों और श्रद्धा केन्द्रों पर कीचड़ उछालने में ही अपनी बहादुरी समझते हैं।

इतिहास बताता है कि वासना में अंधे क्रूर अलाउद्दीन खिलजी ने महारानी पद्मिनी को पाने के लिये चित्तौड़ पर हमला किया। इस बात के इतिहास में कोई प्रमाण नहीं है कि राणा रतन सिंह ने दर्पण में महारानी की छवि खिलजी को दिखाई। यह किस्सा बाद में गढ़ा गया और राष्ट्र-द्वेषी वाम इतिहासकारों ने इसे इतिहास बता दिया। अलाउद्दीन जब चित्तौड़ नहीं जीत पाया तो उसने सन्धि का प्रस्ताव किया जिसे राणा ने मान लिया। यह भी सचाई है कि आतिथ्य की भारतीय परम्परा का निर्वाह करते हुए राणा ने खिलजी का चित्तौड़ में स्वागत किया। इसी से दुखी हो सेनापति गोरा ने चित्तौड़ का त्याग कर दिया। और यह भी सत्य है कि जब राणा रतन सिंह खिलजी को छोड़ने गये तो उस धोखेबाज और मानवता के कलंक ने राणा को कैद कर लिया। गोरा और उनके किशोर भतीजे बादल ने अप्रतिम शौर्य दिखा और अपने प्राणों को होम कर राणा को कैद से छुड़ाया।

इससे गुस्साये धोखेबाज अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर फिर हमला कर दिया। चित्तौड़ के काफी सैनिक गोरा-बादल के साथ युद्ध में काम आ गये थे। इसलिए इस बार मेवाड़ की सेना कमजोर पड़ने लगी। दुर्ग के सैनिकों ने अब केसरिया बाना पहन कर प्राणोत्सर्ग का निर्णय किया। उसके पहले चित्तौड़ की आठ हजार क्षत्राणियों ने महारानी पद्मिनी के साथ जौहर किया। यह त्याग, बलिदान और स्त्री धर्म की पराकाष्ठा थी। भारतीय इतिहास का यह एक उज्ज्वल पृष्ठ है। महारानी पद्मावती (पद्मिनी) →

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण समाज में करता है, सामान्य व्यक्ति भी उसी का अनुसरण करता है। श्रेष्ठ व्यक्ति जो कार्य करता है वह सम्पूर्ण समाज के लिये आदर्श बन जाता है। तात्पर्य इस प्रकार है कि कार्यकर्ता को समाज में अपने कृतित्व एवं व्यक्तित्व से श्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत करना चाहिये।

(भगवद्गीता-३/२१)

आवरण पृष्ठ चित्र परिचय - **ऊपर** - मंचासीन अतिथि **मध्य** में- घोष का प्रदर्शन करने वाले स्वयंसेवक **नीचे** बाएं से- वीरमाता का अभिनंदन करते हुए सरसंघचालक भागवत जी, घोष संचलन करते स्वयंसेवक तथा मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए सरसंघचालक ।

भारत में योग सीखा और यूनान में योगाश्रम खोल दिया

भारत का 'योग' पूरे विश्व में किस प्रकार लोकप्रिय हो रहा है उसका जीता-जागता उदाहरण माँ शिवमूर्ति सरस्वती हैं। वे आस्ट्रेलिया की हैं। १९७६-७७ में उन्होंने स्वामी सत्यानन्द से योग की शिक्षा ली फिर उनकी आज्ञा से यूनान में योग सिखाने चली गईं। आज ग्रीस (यूनान) में उनके आश्रमों में सैंकड़ों यूनानी योग सीखते हैं। अब तक हजारों ग्रीक नागरिक भारत की इस अद्‌भुत देन की शिक्षा ले चुके हैं। यूनान का उनका प्रमुख आश्रम राजधानी एथेन्स से बीस कि.मी. की दूरी पर हाइमेटस पहाड़ी की तलहटी में बना है।

वर्ष १९७७ में अपने गुरु की आज्ञा से शिवमूर्ति सरस्वती जी ने ग्रीस (यूनान) के कलमाता नगर में योग की कक्षाएं लेनी शुरु कीं। उस समय 'चर्च' ने उनका जबर्दस्त विरोध किया। प्रारम्भ का समय संघर्ष का था। धीरे-धीरे सीखने वालों की संख्या बढ़ने लगी। प्रशिक्षु जब अधिक बढ़ने लगे तो माँ शिवमूर्ति ने अन्य स्थानों पर भी योगाश्रम प्रारम्भ कर दिये। उसके बाद हाइमेटस पहाड़ी की तलहटी में एक विस्तृत क्षेत्र में आश्रम बना लिया और उसका नाम रखा 'सत्यानंद आश्रम'। यहाँ मुख्य रूप से योग-शिक्षकों का प्रशिक्षण होता है। इस समय जर्मनी, सर्बिया, इजरायल और स्वीडन के चालीस पुरुष और महिला योग-शिक्षक इस विधा के गूढ़ सूत्र समझ रहे हैं। माँ शिवमूर्ति स्वयं भी यूरोप और अमरीका में योग सिखाने जाती रहती हैं।

→ किसी वर्ग विशेष की नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र का गौरव हैं। वे राष्ट्र के महानायक-नायिकाओं में से एक हैं। स्वप्न में भी उनका अपमान करने की अनुमति किसी को नहीं दी जा सकती । पर अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर एक स्वनामधन्य फिल्मकार खिलजी और महारानी पद्‌मिनी का प्रेम-प्रसंग दिखाने जा रहे हैं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हमारी परम्परा, इतिहास, राष्ट्र-नायकों और श्रद्धा केन्द्रों का अपमान क्या उचित है? पर सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ ऐसा भद्‌दा खेल खेलने में ही अपनी वाहवाही समझता है। यदि हमारा फिल्मी जगत हॉलीवुड की नकल करने में सिद्धहस्त है तो हॉलीवुड की अच्छाइयों को भी अपनाया जाना चाहिये। द्वितीय विश्व युद्ध पर हॉलीवुड में दसियों फिल्में बनी हैं। 'द लांगेस्ट डे' या 'गन्स ऑफ नेवरोन' 'या शिण्डलर्स लिस्ट' जैसी कोई फिल्म हमारे फिल्मी शूरमा भी बना कर दिखायें। ❑

आगामी पक्ष (१ से १५ दिसम्बर २०१७) के अवसर

(मार्गशीर्ष शु.१२ से पौष कृ.१३ तक)

जन्मदिवस

१ दिसम्बर (१८८६) – अफगानिस्तान में सन् १९१५ में 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना करने वाले राजा महेन्द्र प्रताप का जन्म दिवस।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ (इस बार २ दिसम्बर)– अठारहवें तीर्थंकर श्री अरहनाथ की जयंती

मार्गशीर्ष पूर्णिमा (इस बार ३ दिसम्बर)– महर्षि दत्तात्रेय जयन्ती – २४ गुरुओं से शिक्षा प्राप्त कर महर्षि दत्तात्रेय ने आदर्श शिष्य के रूप में ख्याति पाई। इन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है।

३ दिस. (१८८४)– भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद का जन्मदिवस

पौष कृ. १ (इस बार ४ दिस.)– महर्षि रमण जयंती

पौष कृष्ण ८ (इस बार १० दिसम्बर)– श्री माँ शारदा की जयन्ती – रामकृष्ण परमहंस की सहधर्मिणी माँ शारदामणि ने नारीत्व का उच्च आदर्श समाज के सामने प्रस्तुत किया।

११ दिसम्बर (१८८२) – तमिलनाडु के प्रखर राष्ट्रभक्त एवं ओजस्वी कवि सुब्रह्मण्यम भारती का जन्म दिवस।

– संघ के तृतीय सरसंघचालक बालासाहब देवरस का जन्म दिवस (१९१५)

पौष कृष्ण १०,११,१२ (इस बार १२,१३ व १४ दिसम्बर) – २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ, ८ वें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु एवं १० वें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ की जयन्ती

पुण्यतिथि

५ दिसम्बर (१९५०) – महर्षि अरविन्द की पुण्यतिथि

६ दिसम्बर (१९५६) – बाबा साहब अम्बेडकर की पुण्यतिथि

१३ दिसम्बर १८४१ – कश्मीर-लद्‌दाख और तिब्बत को जीतने वाले महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति जनरल जोरावर सिंह की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण अवसर

१२ दिसम्बर १९३० – स्वदेशी दिवस

मार्गशीर्ष शु.१३(इस बार १दिस.) – श्री गुरु ग्रंथ साहब का प्रकाशोत्सव

६ दिसम्बर १९९२ – शौर्य दिवस – कारसेवकों ने अयोध्या में इस दिन गुलामी के चिन्ह बाबरी ढांचे को ध्वस्त कर दिया।

अद्भुत-अद्वितीय स्वर गोविन्दम्

कदम-कदम री साधना, आ देश री आराधना

घोष की स्वर लहरियों ने मंत्रमुग्ध किया

बीती ५ नवम्बर को जयपुर शहर ने एक अद्भुत दृश्य देखा। निर्माण नगर और वैशाली नगर में सड़कों पर दूर तक रंगोली बनी हुई थी। कोई दस-पचास मीटर में नहीं, बल्कि छह कि.मी लम्बे सड़क मार्ग पर मनमोहक रंगोली बनाई गई। दोपहर में दो बजे दो ओर से पूर्ण गणवेश पहने संघ के स्वयंसेवक रंगोली वाले मार्गों पर संचलन करते हुए निकले। आश्चर्य की बात यह थी कि कदम से कदम मिला कर चलते हुए ये डेढ़ हजार स्वयंसेवक विभिन्न वाद्य बजाते हुए चल रहे थे। कोई शंख (बिगुल) बजा रहा था तो कोई आणक (साइड ड्रम), कोई वंशी बजा रहा था तो कुछ वास्ट-ड्रम बजा रहे थे। इन सब की सम्मिलित स्वर-लहरियाँ वातावरण में जादू बिखेर रहीं थीं। घोष की लय के साथ ही स्वयंसेवकों के कदम भी पड़ रहे थे। प्रत्येक वाहिनी (दस्ते) के आगे हाथ में घोष-दण्ड उछालता वाहिनी का प्रमुख अपने घोष-दण्ड से स्वर लहरियों को नियंत्रित कर रहा था। यह घोष-संचलन था और छोटी काशी में पहली बार इसका आयोजन हो रहा था।

संचलन कर रहे सभी स्वयंसेवक जयपुर के जामडोली स्थित केशव विद्यापीठ में तीन दिनों का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी वादन कला का प्रदर्शन कर रहे थे। प्रदर्शन उन्होंने वैशाली नगर स्थित चित्रकूट स्टेडियम में भी किया। यह प्रदर्शन भी रोमांचकारी और अविस्मरणीय था। विभिन्न रचनाओं के आधार पर डेढ़ हजार स्वयंसेवकों का घोष-वादन मंत्र-मुग्ध कर देने वाला था। भारतीय सेना के बैण्ड वादन से यह किसी तरह कम नहीं था, जब कि इसमें बालक भी थे और प्रौढ़ घोष-वादक भी थे। यह रोमांचक प्रदर्शन **स्वर गोविन्दम्** का हिस्सा था जिसका आयोजन जयपुर प्रांत की ओर से चित्रकूट स्टेडियम में किया गया था और जिसमें सरसंघचालक भागवत जी उपस्थित थे। आयोजन में उन्होंने देश की रक्षा में शहीद हुए जवानों के परिवार की वीरांगनाओं को भी सम्मानित किया। घोष शिविर में दुर्लभ १०८ वाद्य यंत्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जयपुर प्रान्त के पहले घोष शिविर **स्वर गोविन्दम्** का आयोजन केशव विद्यापीठ जामडोली स्थित श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय में २ से ५ नवम्बर तक हुआ। जयपुर के आराध्य देव गोविन्द देव जी के नाम पर ही शिविर का नाम **'स्वर गोविन्दम्'** रखा गया था। इस शिविर में १२५० से अधिक स्वयंसेवकों को घोष का प्रशिक्षण दिया गया। राजस्थान के वरिष्ठ प्रचारक स्व. किशन भैया जी की विशेष इच्छा थी कि प्रदेश में घोष वादक स्वयंसेवकों का बड़ा कार्यक्रम होना चाहिये। यह अब पूरी हो गई है।

राजस्थानी परम्परा के दर्शन

राजस्थान के विभिन्न अंचलों की परम्पराओं पर आधारित इस घोष शिविर को **घोष गांव** के रूप में निखारा गया। इसमें व्यवस्थाओं के स्थल को 'ठिकाना गोविन्द देव' नाम दिया गया। घोष वादक स्वयंसेवकों के आवासों को सम्बन्धित क्षेत्र के वाद्य यंत्रों का नाम दिया गया। शेखावाटी क्षेत्र के सीकर, झुंझनू एवं चूरू जिले से आए स्वंयसेवकों के आवास परिसर को 'ढ़ाणी चंग',जयपुर के स्वयंसेवकों के आवास को 'ढ़ाणी मोरचंग' तथा भरतपुर, अलवर के आवास को 'ढ़ाणी इकतारा' नाम दिया गया था। इसी प्रकार अन्य आवासों के नाम अलगोजा, खरताल आदि दिये गए। सरसंघचालक के आवास को 'बाबोसा रो ठिकाणो', अधिकारी आवास को 'बडेरां री पोल', भोजनालय को 'रसोड़ा', जलघर को 'पनघट' , मैदान को 'घोष रमण', स्मृति मंदिर को 'सुहावणा दरसन' बौद्धिक पांडाल को 'ग्यान गोठ'(किशन भैया चौपाल), भोजन पांडाल को 'जीमण री ठौर' एवं स्वागत कक्ष को 'अगवाणी' का नाम दिया गया।

शिविर स्थल पर फ्लेक्स बैनर के स्थान पर टाट-पट्टी पर मिट्टी, गोबर का लेप कर उस पर चूने से लेखन कर संकेतक बनाये गये। मंच के पीछे के पर्दें में भी सूखी लकड़ी के फ्रेम और नाम पट्टिकाओं का प्रयोग किया गया। शिविर स्थल को सजाने-संवारने के लिए मिट्टी, गोबर, बांस, लकड़ी, घास, टाट की बोरी, जैसे अनेक साधनों का उपयोग किया गया, जिससे कि वातावरण प्राकृतिक रहे, साथ ही पर्यावरण भी दूषित न हो।

वाद्यों की प्रदर्शनी

रा.स्व.संघ के उत्तम संचलन और शारीरिक कार्यक्रमों में घोष की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। संघ की स्थापना के तीन वर्ष बाद ही संघ में घोष को शामिल कर लिया गया था। हमारे घोष रचित धुनों को भारतीय सेना भी बजाती है। दिल्ली में १९८२ में हुए एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह में संघ के घोष की धुन ''शिवराजे'' नौसेना दल द्वारा बजाई गई। इसी के साथ किरण, उदय, चेतक, दशमेश, कावेरी, गायत्री, परमार्थ, भूप, जन्मभूमि, केदार, दुर्गा, बंगश्री इत्यादि ४० और धुनों को नौसेना में शामिल किया गया है।

घोष शिविर में ऐतिहासिक और परम्परागत लोक वाद्ययंत्रों की

प्रदर्शनी 'ठिकाना गोविन्ददेव' में लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान विश्वविद्यालय ललित कला संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर मधु भट्ट तैलंग ने किया । इसमें १०८ प्रकार के लोक वाद्य कामायचा, सिंधी सारंगी, रणसिंगा, नरसिंगा, सुरिंदा, डेरू, रबाब, चिकारा, सारंगी, खरताल, मंजीरे, ढोलक, चंग, मोरचंग, शहनाई, इकतारा, नगाड़ा, खंजरी शंख आदि को जनता के अवलोकन के लिए रखा गया था।

५ नव. को होने वाले घोष संचलन हेतु पथ संचलन के मार्ग पर माताओं बहनों ने उत्साहपूर्वक भव्य रंगोली बनाई। रंगोली लगभग ६ किमी लम्बी सड़क पर बनाई जिसका क्षेत्रफल लगभग ६५००० वर्गफीट था। रंगोली बनाने में कई परिवारों की तीन पीढ़ियों ने एक साथ लगकर सहयोग किया। रंगोली का मनोरम दृश्य देखते ही बनता था।

द्विधारा पथ संचलन

घोष शिविर में प्रशिक्षित स्वयंसेवकों ने ५ नव. को दोपहर में दो टोलियों में पथ संचलन निकाला। पहले संचलन को 'पांचजन्य नाद' तथा दूसरे को 'देवदत्त नाद' नाम दिया गया था। पांचजन्य नाद ने राजेन्द्र नगर, वैशाली से तथा देवदत्त नाद ने निर्माण नगर से प्रारम्भ होकर एक साथ चित्रकूट स्टेडियम के क्रमशः पश्चिमी तथा पूर्वी द्वार से प्रवेश किया।

"संगठन शास्त्र का मंत्र है – "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" अर्थात् कदम से कदम मिलाकर चलने से और स्वर से स्वर मिलाकर गाने से मन मिलते हैं और जब मन मिलते हैं तो संगठन होता है।"

घोष शिविर का भव्य समापन समारोह जयपुर के वैशाली नगर स्थित चित्रकूट स्टेडियम में सरसंघचालक भागवत जी के उद्बोधन से हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व आई.ए.एस. बी.एल.नवल तथा विशिष्ट अतिथि उद्योगपति श्री किशोर रूंगटा थे। समारोह में भागवत जी ने वीरांगना श्रीमती कान्ता यादव, श्रीमती सुमित्रा देवी, श्रीमती निशा लाल एवं श्रीमती संपत कंवर और वीर माताओं श्रीमती मेरी कुट्टी थॉमस एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी बुंदेला को भारत माता का चित्र, शॉल और श्रीफल देकर सम्मानित किया। इसी के साथ उन्होंने वीरांगनाओं तथा वीर माताओं का वन्दन भी किया। उसके उपरान्त स्वयंसेवकों ने घोष की विभिन्न रचनाओं की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं।

अपने उद्बोधन में सरसंघचालक जी ने कहा कि हमारा शास्त्रीय संगीत विश्व को सत्य, करुणा और पवित्रता की ओर ले जाता है जबकि विश्व के अन्य भागों में संगीत में मनोरंजन पक्ष पर ध्यान रखा जाता है। संगीत से समरसता का भाव पैदा होता है। इसी विशेषता के कारण संघ कार्य पद्धति में संगीत को स्वीकार किया गया। सामूहिक स्वर में सबके साथ रहने से संस्कार पैदा होते हैं। हम विविधता में एकता को देखें इसलिए प्रांगणिक संगीत और वादन का चलन संघ में है। संगीत के माध्यम से सभी को साथ जोड़ने का प्रयास है। घोष वादक स्वयंसेवकों को संगीत बजाने के लिए कोई प्रतिफल नहीं मिलता बल्कि अपनी जेब से खर्च करके राष्ट्रहित में संघ की योजना के अनुसार वादन किया जाता है। विभिन्न आयु वर्ग और अलग-अलग चाल-ढाल के ये स्वयंसेवक पेशेवर वादक नहीं हैं।

घोष सरमसता का संस्कार है

घोष का महत्व रेखांकित करते हुए भागवत जी ने कहा कि राष्ट्र हमें बहुत कुछ देता है, हमें भी तो कुछ राष्ट्र को देना चाहिये। हम जो सीखते हैं, उसे देश हित में लगा देते हैं। संघ में पहला संस्कार बिना स्वार्थ कुछ देना होता है। प्रांगण में जमा होकर रण संगीत गायन की परम्परा उस समय हमारे यहां नहीं थी। हमारे पास संचलन के लिए संगीत नहीं था। हमने अंग्रेजों से रचनायें उधार लीं। प्रांगणिक संगीत की सूक्ष्म बातें समझी और फिर भारतीय रागों पर आधारित रचनायें तैयार की। उन्होंने कहा कि भारत विश्व में सभी से अच्छी बातों को स्वीकार करता है लेकिन किसी पर निर्भर नहीं होता। उन्होंने यह भी कहा कि संगीत समरसता का संस्कार है। सुर और ताल मिलकर चलते हैं तभी संगीत तैयार होता है। सबके सामूहिक हितों का ध्यान रखते हुए समरसता का संस्कार पैदा किया जाता है। हमें भारत को विश्वगुरू राष्ट्र बनाना है।

भारत की हिन्दू पहचान को स्पष्ट करते हुए सरसंघचालक ने कहा कि हम सब हिन्दू हैं, हमारा हिन्दू राष्ट्र है। यह नाम किसी जाति के नाम से पैदा नहीं हुआ वरन् सम्पूर्ण विश्व का भला करने के **वसुधैव कुटुम्बकम्** के सिद्धान्त पर चलने के कारण हमें हिन्दू नाम मिला है। एक मात्र अखंड भारत की ही पहचान हिन्दू नाम से है। हमारी संस्कृति सम्पूर्ण विश्व का कल्याण चाहने वाली तथा सभी के प्रति अपनत्व का भाव रखने वाली संस्कृति है।

जाति-भेद को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए भागवत जी ने कहा, संघ का मानना है कि समानता आनी चाहिये। दुर्भाग्य से हमारे यहाँ जाति भेद और अस्पृश्यता का कलंक रहा है। इस कारण समाज का एक बड़ा हिस्सा पिछड़ गया। इस बुराई को जड़ मूल से बाहर फैंकने की जरूरत है तभी देश शक्ति-सम्पन्न तथा विश्व गुरु बनेगा। इन पीछे छूटे हुए बान्धवों के लिये संविधान में कुछ प्रावधान हैं। उन्हें ठीक ढंग से लागू किया जाए। उन्होंने कहा कि विषमता समाप्त होने तक पीछे छूट गए लोगों को वो लाभ मिलते रहना चाहिये। भारत रत्न बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि देश में स्वतन्त्रता तथा समता लानी है तो समानता रखनी होगी।

सरसंघचालक जी ने आगे कहा कि देश की उन्नति का ठेका किसी ने भी नहीं लिया है। यह काम सभी का है। हमें संस्कारों को ग्रहण कर सबल, सुरक्षित और सामर्थ्यवान देश बनाने के प्रयास करने होंगे। जहाँ संस्कार नहीं, वहाँ शक्ति का दुरुपयोग होता है। लेकिन संस्कारयुक्त शीलवान पुरुष पीड़ा हरने का काम करते हैं। सुरक्षा का काम करते हैं। उन्होंने स्वयंसेवकों और आमजन से सारी दुनिया को सुखी सम्पन्न बनाने और भारत को विश्व गुरू बनाने का प्रयास करने का आह्वान किया। ❑

प्रखर राष्ट्रवाद, त्याग और सेवा की प्रतिमूर्ति भगिनि निवेदिता

२८ अक्तूबर १८६७ को जन्मी मार्गरेट नोबल जिन्हें स्वामी विवेकानन्द ने निवेदिता नाम दिया और बाद में जनमानस में जो भगिनी निवेदिता के नाम से लोकप्रिय हुईं का यह सार्द्ध शताब्दी वर्ष है। इस अंक से शुरु कर प्रत्येक अंक में हम भगिनि निवेदिता के विचारों, उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंगों को सुधि पाठकों को प्रस्तुत करेंगे। प्रस्तुत है इस अंक में उनकी संक्षिप्त जीवनी।

त्याग और सेवा की प्रतिमूर्ति भगिनी निवेदिता का जन्म सैम्युअल नोबल एवम मैरी हैमिल्टन दम्पत्ति के यहाँ २८ अक्तूबर १८६७ को आयरलैण्ड में हुआ। जन्म के समय बालिका का नाम रखा गया मार्गरेट। मार्गरेट के पिता सैम्युअल नोबल एक चर्च में पादरी थे। इनके दादा जॉन नोबल भी एक आयरिश चर्च में पादरी थे। बचपन से ही मार्गरेट अपने दादा तथा माता–पिता के साथ गरीबों की झुग्गी झोपड़ियों में जाकर उनकी सेवा करती थी। इस प्रकार सेवाभाव बाल्यकाल से ही उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

पिता की असमय मृत्यु के कारण मार्गरेट नोबल की शिक्षा अपने ननिहाल में हुई और आपने हैलीफॉक्स कॉलेज में अपनी शिक्षा पूर्ण की। उनकी रुचि संगीत, कला और जीव विज्ञान में विशेष थी। १७ वर्ष की अल्पायु में ही जीविकोपार्जन की दृष्टि से उन्हें शिक्षिका की नौकरी करनी पड़ी। १८९२ में इन्होंने अपना खुद का स्कूल प्रारम्भ किया। वह शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया।

नई दिशा – १६ नवम्बर १८९५ का दिन मार्गरेट के जीवन को एक नई दिशा देने वाला सिद्ध हुआ जब उनकी एक सहेली लेडी इजाबेल ने उन्हें एक भारतीय सन्यासी से मुलाकात के लिये अपने घर बुलाया। यह भारतीय सन्यासी और कोई नहीं बल्कि स्वामी विवेकानन्द थे जिनके व्याख्यान और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मार्गरेट ने उन्हें मन ही मन अपना गुरु मान लिया। एक दिन प्रवचन के बीच स्वामी जी ने मार्गरेट को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत में महिलाओं के कल्याण और शिक्षा के लिए उनके पास विभिन्न योजनाएं हैं जिन्हें क्रियान्वित करने में मार्गरेट उनको मदद कर सकती है।

भारत आगमन – स्वामी जी की आज्ञा और प्रेरणा से वे २८ जनवरी १८९८ को मोम्बासा जलयान में सवार हो कलकत्ता बन्दरगाह पर पहुँच गई, जहाँ स्वयं स्वामीजी ने उनका भारतभूमि पर स्वागत किया। हुगली तट पर बेलूर मठ में उनके निवास की व्यवस्था की गई। २५ मार्च १८९८ को स्वामीजी ने मुखर्जी के बगीचे में मार्गरेट को दीक्षा दी। भस्म का त्रिपुण्ड लगा कर स्वामी जी ने उन्हें नाम दिया 'भगिनि निवेदिता'। इन्हीं दिनों कलकत्ता में भयंकर प्लेग फैल गया। लोग धड़ाधड़ मर रहे थे। जिस सफाई के काम को करने में सफाई–कर्मी तक कतरा रहे थे उसे पूरे मनोयोग से निवेदिता पूरा करती। हाथ में फावड़ा लेकर वह आलम बाग की तंग गलियों में घुस गई। उनके इस कार्य से प्रभावित होकर अन्य लोग भी सेवा में हाथ बंटाने लगे।

कन्या पाठशाला –निवेदिता के सेवा भाव से प्रभावित होकर स्वामीजी अल्मोड़ा, नैनीताल, बारामूला एवं अमरनाथ की यात्रा पर अन्य शिष्यों के साथ निवेदिता को भी ले गए। क्षीरसागर दर्शन यात्रा में एक सप्ताह तक शिष्य मण्डली ने अखण्ड साधना की। यहीं पर स्वामीजी ने निवेदिता के सिर पर एक स्वर्ण पुष्प रख कर कहा– ''मैंने तुम्हें माँ के चरणों में समर्पित कर दिया है। अब तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हुई।'' लौटने पर बोसापारा वाले छोटे रामकृष्ण आश्रम में माँ शारदा के साथ उनके रहने की व्यवस्था की।

१३ नवम्बर १८९८ को एक छोटी सी किराए की कुटिया में निवेदिता ने एक छोटी सी पाठशाला प्रारम्भ की। निवेदिता के आकर्षक व्यक्तित्व ने इसे लोकप्रिय बना दिया। उन्होंने बोसापारा स्थित अपने मकान को लॉज का स्वरूप दे दिया। कालान्तर में यह लॉज अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और बुद्धिजीवियों का आश्रय स्थल बन गया। आपने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। वे क्रांतिकारियों की अनुशीलन समिति की सक्रिय सदस्या थीं।

अद्‌भुत सेवा – इन दिनों बंगाल में भयंकर बाढ़ आ गई। अद्‌भुत सेवा कार्य कर निवेदिता ने लोगों का दिल जीत लिया। उनके सेवा कार्यों से प्रभावित होकर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने उन्हें लोकमाता की उपाधि से विभूषित किया। ४ जुलाई १९०२ को स्वामी जी ब्रह्मलीन हुए। अब निवेदिता को अपने गुरु द्वारा सौंपा हुआ महान कार्य पूरा करना था और वह था भारत की आजादी के लिए संघर्ष करना। पूरे मनोयोग से वह इस कार्य में जुट गई।

सर्वस्व न्यौछावर –१९०५ में वे गंभीर रूप से बीमार पड़ीं। उनके पास जो सम्पत्ति तथा नगद राशि आदि थी वह उन्होंने बेलूर मठ के लिए समर्पित कर दी। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनकी निधि से भारत की महिलाओं को राष्ट्रीयता की शिक्षा दी जाय।

१३ अक्तूबर १९११ को दार्जीलिंग में प्रातः सूर्यदर्शन कर इस महान आत्मा ने अंतिम सांस ली। विदेश में जन्म लेकर भारतीय संस्कृति के लिए जीवन भर काम करने वाली इस अद्‌भुत नारी की याद में सर जे.सी. बोस ने एक विख्यात अनुसंधानशाला की स्थापना की। वहां उन्होंने हाथ में मशाल लिए एक महिला की प्रतिमा प्रस्थापित की जो ज्योतिर्मय निवेदिता की प्रतिमूर्ति थी। हिमालय की पवित्र वादी में इस पवित्र आत्मा को समाधि दी गई। उनकी समाधि पर ये शब्द अंकित हैं–

''यहाँ भगिनि निवेदिता चिरनिद्रा में सो रही है, जिसने भारत के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। ''

धन्य है प्रातः स्मरणीय भगिनी निवेदिता।

– केदार चतुर्वेदी

३० नवम्बर (मार्गशीर्ष शुक्ल ११) गीता जयंती पर विशेष

सतत कर्म में लगे रहने की प्रेरणा देती है गीता

एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतम् एको देवो देवकीपुत्र एव।
एको मंत्रस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।

एक ही शास्त्र है जो देवकीपुत्र भगवान ने श्रीमुख से गायन किया–गीता! एक ही प्राप्त करने योग्य देव है। उस गायन में जो सत्य बताया–आत्मा! सिवाय आत्मा के कुछ भी शाश्वत नहीं है। उस गायन में उन महायोगेश्वर ने क्या जपने के लिए कहा? ओम। अर्जुन, ओम अक्षय परमात्मा का नाम है, उसका जाप कर और मेरा ध्यान धर। एक ही कर्म है गीता में वर्णित – 'परमदेव एक परमात्मा की सेवा'। उन्हें श्रद्धा से अपने हृदय में धारण करें। अस्तु, आरम्भ से ही गीता अपना शास्त्र रहा है। भगवान श्रीकृष्ण के हजारों वर्ष पश्चात परवर्ती जिन महापुरुषों ने एक ईश्वर को सत्य बताया, गीता के ही सन्देशवाहक हैं। ईश्वर से ही लौकिक एवं पारलौकिक सुखों की कामना, ईश्वर से डरना, अन्य किसी को ईश्वर न मानना– यहाँ तक तो सभी महापुरुषों ने बताया, किन्तु ईश्वरीय साधना, ईश्वर तक की दूरी तय करना– यह केवल गीता में ही सांगोपांग क्रमबद्ध सुरक्षित है। गीता से सुख शांन्ति तो मिलती ही है, यह अक्षय अनामय पद भी देती है।

"मिस्र के राजा के पिरामिड के ऊपर आत्मा की अमरता का गीता का संदेश मिस्री भाषा में लिखा होना गीता के विश्वव्यापी प्रभाव को दर्शाता है।"

श्रीमद् भगवद्गीता महाभारत ग्रन्थ के भीष्म पर्व में वर्णित है। ७ सात सौ श्लोकों का यह संवाद संस्कृत भाषा में रचित हैं। कुरुक्षेत्र के युद्ध मैदान में कर्तव्यच्युत अर्जुन को उनके सारथि बने भगवान श्रीकृष्ण ने गहन, उत्कृष्ट अन्तःकरण को आलोड़ित करने वाले आध्यात्मिक सत्य से परिचय करवाया तथा योग, वेदान्त, भक्ति तथा कर्म की व्याख्या कर समझाया। शरीर के नाशवान होने एवं आत्मा की अमरता और मनुष्य योनि में उत्पन्न होने पर पुण्य अर्जित कर मोक्ष प्राप्त करना (जन्म–मरण के बन्धन से मुक्ति) ही गीता में अंतिम लक्ष्य बताया गया है।

सर्वकालिक संदेश – गीता जीविका संग्राम का साधन नहीं है अपितु जीवन संग्राम में शाश्वत विजय का क्रियात्मक प्रशिक्षण है। गीता में वर्णित युद्ध अस्त्र–शस्त्र से लड़ा जाने वाला सांसारिक युद्ध नहीं है अपितु सद् तथा असद् प्रवृत्तियों, धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र, दैवी सम्पद् एवं आसुरी सम्पद्, सजातीय तथा विजातीय, सद्गुण एवं दुर्गुणों के संघर्ष की व्याख्या है। संघर्ष का स्थान (धर्मक्षेत्र एवं कुरूक्षेत्र) यह शरीर ही है (गीताकार के शब्दों में– ***'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते'***)। इसमें बोया हुआ भला और बुरा बीज संस्कार रूप से सदैव उगता है। दस इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, पाँचों विकार और तीन गुणों का विकार इस क्षेत्र का विस्तार है। यही कुरुक्षेत्र है। सद्गुरु के माध्यम से साधना के सही दौर में पड़कर साधक जब परमधर्म परमात्मा की ओर अग्रसर होता है तब यह क्षेत्र धर्मक्षेत्र बन जाता है। यह शरीर ही क्षेत्र है। इसी शरीर के अन्तराल में अन्तः करण की दो प्रवृत्तियाँ हैं – दैवी सम्पद् और आसुरी सम्पद् जिनके बीच निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। तत्वदर्शी महापुरुष के संरक्षण में क्रमशः साधना करने पर दैवी सम्पद् का उत्कर्ष और आसुरी सम्पद् का सर्वथा शमन हो जाता है। जब कोई विकार ही नहीं रहा , मन का सर्वथा निरोध और निरुद्ध मन का भी विलय हो जाता है तो दैवी सम्पद् की आवश्यकता भी समाप्त हो जाती है। इसके पश्चात महापुरुष यदि कुछ करता है तो केवल अनुयायियों के मार्गदर्शन के लिए ही करता है।

मोक्ष के तीन मार्ग– अपनी शक्ति को समझकर, हानि–लाभ का निर्णय लेकर नियत कर्तव्य कर्म को करना ज्ञान योग है। इस मार्ग का साधक जानता है कि आज मेरी यह स्थिति है आगे इस भूमिका में परिणित हो जाऊंगा, फिर अपने स्वरूप को प्राप्त करूंगा। अपनी स्थिति का ज्ञान रख कर चलता है। इसलिये ज्ञानमार्गी कहा जाता है। समर्पण के साथ कर्तव्य कर्म में प्रवृत्त होना, लाभ–हानि (परिणाम) का निर्णय अपने इष्ट परमात्मा पर छोड़ना निष्काम कर्मयोग है। इसमें कर्तापन का भाव नहीं होता है, अतः वह परिणाम (फल) का भोक्ता भी नहीं होता है। तीसरा भक्ति मार्ग है।

एकान्त का सेवन करते हुए, नियत कर्म में अपनी शक्ति समझकर अथवा समर्पण के साथ सतत प्रयत्नों द्वारा सर्वस्व का न्यास ही सन्यास है, जो मोक्ष का पर्याय है। योगेश्वर श्रीकृष्ण के शब्दों में मनुष्य तीन में से किसी भी मार्ग से मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। फिर भी सामान्य जन के लिए श्रद्धा और भक्ति के साथ निष्काम कर्म योग को श्रेयस्कर बताया गया है।

विश्वव्यापी प्रभाव– भारत के पांच महान ग्रन्थों में से श्रीमद्भगवद्गीता एक है तथा संभवतः सर्वाधिक लोकप्रिय भी जिसे सर्वकालिक तथा सभी सम्प्रदायों, पंथों, जातियों, उम्र के लोगों के लिए उपयोगी माना गया है। गीता की शिक्षाओं का प्रभाव भी भारत तक ही सीमित न रहते हुए विश्व व्यापी है। मिस्र के राजा के पिरामिड के ऊपर गीता के संदेश (आत्मा की अमरता) का लिखा होना इसकी पुष्टि करता है। यूनानी दर्शन में भी आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म सिद्धांत आदि की चर्चा गीता के प्रभाव को दर्शाती है। इसी प्रकार सुकरात के योग्यतम शिष्य प्लूटो द्वारा रथ और घोड़े की उपमा शरीर–इन्द्रिय और आत्मा के वर्णन में प्रयोग करना तथा आदर्श समाज को रक्षक, सैनिक और कामगार में विभाजित करना निश्चय ही भारतीय दर्शन के प्रभाव को दर्शाता है। आधुनिक काल में गीता का अनुवाद विश्व की अधिकांश भाषाओं यथा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, अमेरिकन में हुआ है। विकसित पश्चिमी देशों के कई व्यक्ति गीता से प्रभावित होकर सांसारिक कार्यों को छोड़ हरे कृष्ण मिशन से जुड़कर हिन्दू दर्शन के अनुयायी बन इसके प्रचार–प्रसार तथा मानवता की सेवा में प्रवृत्त हुए हैं।

–मेघराज खत्री

पूर्ण समर्पण की प्रेरणा देने वाले भक्त नरसी मेहता

जन्म दिवस मार्गशीर्ष शु. ७ पर विशेष (इस बार २६ नव.)

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे।।

ये पंक्तियाँ भक्त शिरोमणि नरसी मेहता की लिखी हुई हैं। पूरे उत्तर भारत में नरसी मेहता की भक्ति प्रसिद्ध है। उनके जीवन की अनेक घटनायें लोक-मानस में बसी हुई हैं और उन पर कई चलचित्र भी बन चुके हैं। भक्त नरसी को श्रीकृष्ण पर अटूट विश्वास था और लोकमान्यता है कि स्वयं सांवलिया सेठ (योगेश्वर श्रीकृष्ण) ने उनके कई काम सम्पन्न कराये। नरसी के पुत्र के विवाह के समय, उनकी भक्ति की परीक्षा के समय, पुत्री के विवाह के समय तथा दोहिती के विवाह के समय सांवलिया सेठ ने स्वयं प्रकट होकर नरसी का सम्मान बचाया। **नरसी मेहता का जीवन अपने आराध्य, अपने लक्ष्य पर अटूट आस्था रखने की प्रेरणा देता है। जब कोई व्यक्ति पूर्ण समर्पण के साथ अपने स्वीकारे गये लक्ष्य से एकाकार हो जाता है तो लक्ष्य प्राप्त होकर ही रहता है। अपने राष्ट्र के चरमोत्कर्ष का लक्ष्य लेकर चल रहे कार्यकर्ताओं के लिये नरसी का जीवन अपने लक्ष्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण का संदेश देता है।**

आशीर्वाद से वाणी मिली – मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी विक्रमाब्द १४७०(१४१३ ईसवी) के दिन गुजरात के भावनगर के तलाजा गाँव में बड़नगर नागर ब्राह्मण परिवार में नृसिंह मेहता उपाख्य नरसी मेहता का जन्म हुआ था। जब नरसी पाँच वर्ष के थे, तभी उनके माता-पिता चल बसे। कहा जाता है कि आठ वर्ष की आयु तक नरसी बोल नहीं पाते थे और एक साधु के सिर पर हाथ रखते ही वे बोलने लगे। उस घटना से उनके बालमन में साधु समाज के प्रति लगाव और ईश्वर में अटूट आस्था का उदय हुआ। बाल्यकाल में ही नरसी ने अपना योगक्षेम भगवान पर छोड़ दिया और साधुमंडली में नृत्य, कीर्तन करते हुए उनका समय बीतता था।

भाई और भाभी ने यह सोचकर कि विवाहोपरांत नरसी घर का काम सँभाल लेगा, उनका विवाह माणिकबाई नामक कन्या से कर दिया। परन्तु इससे नरसी की दिनचर्या में कोई अंतर नहीं आया। एक दिन भाभी ने उलाहना दिया, 'ऐसी भक्ति है तो भगवान से क्यों नहीं मिल लेते?' भाभी का व्यंग्य नरसी के हृदय को स्पर्श कर गया और वे जूनागढ़ से कुछ दूरी पर स्थित शिवमंदिर चले गये। उन्होंने भगवान शिव की मनोयोग से उपासना की और मन में हठ ठान लिया कि शंकर भगवान दर्शन देंगे, तभी घर वापस जाना है। भूख-प्यास सब कुछ भुलाकर सात दिनों तक निरन्तर ध्यान लगाये बैठे नरसी की भावप्रवण भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए।

कहते हैं कि भगवान शिव ने गोपी स्वरूप प्रदान करते हुए नरसी को श्रीकृष्ण के समीप जाने को कहा। नरसी गोपी की भाँति नृत्य करते हुए श्रीकृष्ण के सान्निध्य में पहुँच गये।

श्रीकृष्ण की भक्ति-भगवान श्रीकृष्ण के सान्निध्य में नरसी आजीवन रहे और उनके सभी कार्य प्रभु ने ही सँवारे। भगवान शिव और श्रीकृष्ण के दर्शन के उपरान्त नरसी घर लौटे। अब श्रीकृष्ण की बाललीला, रासलीला, दानलीला पर उनके मुख से, कीर्तन के पद प्रकट होने लगे। उनकी दृष्टि में भक्त वही है जो पराई पीड़ा को जाने, दूसरों के दुःख में निरभिमान भाव से उपकारी बने और किसी की निन्दा नहीं करे, मनसा-वाचा-कर्मणा स्थिर हो।

श्रीकृष्ण पर लिखीं नौ पुस्तकों के अतिरिक्त नरसी मेहता ने अपने जीवन से जुड़ी कतिपय अलौकिक घटनाओं को भी काव्यबद्ध किया। जैसे उनके पुत्र श्यामलदास के विवाह के प्रस्ताव को जब त्रिपुरान्तक नाम के बड़े व्यवसायी ने दहेज की माँग कर ठुकरा दिया तो श्रीकृष्ण व्यवसायी के वेश में वहाँ पहुँचे और त्रिपुरान्तक के सामने हीरों, मोतियों का ढेर लगा दिया। नरसी मेहता ने इस घटना का अपनी कृति 'शामलदास नो विवाह' में बहुत ही सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है। 'हारमाला' ग्रंथ में नरसी ने उस घटना का वर्णन किया है जब भक्त की परीक्षा की घड़ी में भगवान की मूर्ति ने अपने गले की माला उठाकर नरसी के गले में डाल दी।

नरसी का मायरा- दोहिती के विवाह अवसर पर किसी स्त्री ने उनकी समधन से पूछा कि लड़की के मामा और नाना ने कन्यादान में क्या दिया, तो समधन ने मजाक में कह दिया, 'दो भाठे (मिट्टी के कलश) दिये हैं।' यह सुन कर नरसी लज्जित हो गये और भगवान को याद कर उन्हें अपना मान बचाने को कहने लगे। तभी भगवान सामान्य व्यक्ति का रूप धर बैलगाड़ी लाद कर लड़की के लिये लाल जोड़ा, चुनरी, विवाह की जरी (कपड़े), गहना, मोती, हीरे तथा अनेक तरह के उपहार ले कर आए। इस तरह भगवान की भेजी सामग्री से उनके भक्त नरसी ने भात दिया। यह मार्मिक वर्णन उनकी कृति 'मामेरू' में मिलता है।

यह घटना जन-मानस में 'नरसी जी रो मायरो' नाम से प्रसिद्ध है। इसी घटना पर गाँवों, कस्बों में कथा-वाचन, ख्याल, नाटक आदि होते हैं और इसी को आधार बना कर कई फिल्में भी बनाई गईं हैं।

नरसी मेहता सदा भगवद्भजन में ही तल्लीन रहते और **सफाईकर्मियों तथा अस्पृश्य माने जाने वाले अन्य लोगों के घरों में जाकर कीर्तन करते थे।** उच्चकुलीन माने जाने वाले नागर ब्राह्मण समाज ने उन्हें बहिष्कृत कर दिया परन्तु शीघ्र ही भूल सुधारते हुए उन्हें फिर से अपनाया। गुजराती भाषा के आदि कवि कहे जाने वाले नरसी मेहता १५३८ विक्रमाब्द (१४८१ ईसवी) में गोलोकवासी हो गये। ❑

-रमेश कुमार शर्मा, *बीकानेर*

भारत जो महान् है –३

जाति व्यवस्था का मौलिक स्वरूप समाप्त हो गया है

❑ फ्रांक्वाँ गोशे

पश्चिमी विचारकों, पश्चिमी चिंतन से प्रभावित तथाकथित भारतीय बुद्धिजीवियों,सेकुलरवादी चिंतकों तथा वाममार्गी इतिहासकारों ने आर्यों के द्रविड़ों पर आक्रमण, वेदों के त्रुटिपूर्ण काल निर्धारण की तरह जो तीसरी मिथ्या अवधारणा थोपी है वह समाज में कार्य विभाजन की विलक्षण पद्धति जाति व्यवस्था भारतीय मानस की भ्रामक व्याख्या इस बौद्धिक छल ने भारतीय समाज को खण्ड–खण्ड विभाजित कर विभिन्न वर्गों को एक दूसरे के सामने आक्रामक मुद्रा में खड़ा कर भारत के समक्ष गहरी चुनौती प्रस्तुत कर दी है।

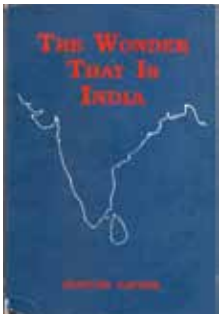

पश्चिमी इतिहासकारों, विचारकों एवं उन्हीं के सुर में सुर मिलाने वाले वामपंथी एवं सेकुलरवाद का लबादा ओढ़े भारतीय बुद्धिजीवियों ने आर्य–द्रविड़ विभाजन एवं वेदों के काल निर्धारण से भी अधिक जिस व्यवस्था को हृदय से कोसते हुए उसकी मिथ्या तर्कहीन व्याख्या की है वह है जाति व्यवस्था। यदि कोई पूर्वाग्रह को तिलांजलि देकर जाति व्यवस्था का यथार्थपरक आकलन करना चाहे तो इसके मूल को वेदों से ढूंढना होगा।

कार्य विभाजन की विलक्षण पद्धति

यूरोप की तरह ही भारत में भी जाति व्यवस्था वस्तुतः समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य कार्य विभाजन के लिए प्रारम्भ की गई थी। किन्तु भारत में कार्य विभाजन का जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया वह अपने आप में विलक्षण था। एक व्यक्ति अपने ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण ब्राह्मण नहीं था बल्कि उसे समाज के आध्यात्मिक एवं बौद्धिक उत्थान के दायित्व का निर्वहन करना होता था। उसे कठोर तपश्चर्या से अपने को संस्कारित कर आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त करनी होती थी ताकि वह समाज के अन्य वर्गों में सम्मान प्राप्त कर सके। उसकी यह जीवन शैली कोई एक बार किया जाने वाला उपक्रम नहीं था, बल्कि सतत् जीवनचर्या थी।

क्षत्रिय भी किसी राज परिवार या योद्धा का पुत्र होने मात्र से क्षत्रिय नहीं बन जाता था। उसे समाज की सुरक्षा के लिए सदैव सन्नद्ध रहना होता था। पौरुष, शौर्य एवं अदम्य साहस उसके व्यक्तित्व के स्वाभाविक गुण होते थे। उसे अपनी प्रकृति की झलक अपने व्यवहार एवं आचरण से सदैव देनी होती थी। सच कहा जाये तो एक जुझारू व्यक्ति की पहचान जिस व्यक्ति में दिखाई देने मात्र से प्रकट हो वही क्षत्रिय कहलाने का हकदार होता था।

इसी प्रकार वैश्य न केवल समाज के लिए धन अर्जन की कला में निपुण व्यक्ति होता था अपितु उसको पूरे समाज के भरण पोषण का दायित्व निभाना होता था। समाज का चौथा वर्ग जो शूद्र था वह समाज के वे सामान्य कार्य करता था जो समाज के शेष वर्ग अपने कर्तव्यों के पालन में व्यस्त रहने के कारण नहीं कर पाते थे। समाज का चौथा वर्ग समाज का आधार स्तम्भ या नींव का पत्थर था, जिस पर समाज का भव्य महालय अपने वैभव के साथ स्थित रहता था। समाज में कोई भी कार्य श्रेष्ठता–हीनता में वर्गीकृत नहीं था। वेदों से ज्ञात होता है कि एक ही परिवार के कई लोग अलग–अलग कार्य भी कर सकते थे। एक उल्लेख के अनुसार परिवार का मुखिया कविता करता है तो माँ पिसनहारी है एवं पुत्र कृषि कार्य में संलग्न।

जातिप्रथा का मूल आधार

भारत एवं भारतीयता के बारे में गहरी समझ रखने वाले महान् चिंतक एवं स्वप्न–दृष्टा महर्षि अरविन्द इस मत से सहमत हैं। उनके अतिरिक्त ऐसे अनेक ऋषियों ने इस वास्तविकता को प्रतिपादित किया है। उनमें से कुछ का तो कथन है कि भारतीयों का दैवीय शक्तियों के साथ ब्रह्माण्डीय सम्पर्क था। व्यक्ति अपने पूर्वजन्म में किये आध्यात्मिक विकास के अनुरूप ही जन्म लेता था। पर सत्य यह है कि जब तक भौतिकतावाद की सनक एवं पश्चिमी चिंतन की छाप भारतीय मनीषा पर नहीं हुई उक्त व्यवस्था सुचारू रुप से चलती रही।

पुनरावलोकन की प्रासंगिकता

भारतीय मनीषा ने अपने जन्म से आज तक अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं। समय–समय पर यह अपनी श्रेष्ठता एवं उपादेयता बखूबी प्रमाणित करती रही है। किन्तु काल एवं परिस्थितियों में आये बदलाव के कारण प्रश्न उठने लगे हैं कि क्या कोई इस सिद्धान्त को अब भी अक्षरशः स्वीकार कर सकता है? यह भारत के उस कालखण्ड में स्वीकार्य हो सकती थी जब भारत के लोगों को अपने अंतर की सच्चाई से साक्षात्कार होता था। कालान्तर में मानव की लोभ एवं स्वार्थ की स्वाभाविक प्रवृत्तियों ने संभवतः इसे प्रदूषित कर दिया है। महर्षि अरविन्द ने सिद्धान्त रूप में जाति व्यवस्था के मौलिक स्वरूप का समर्थन किया है। किन्तु इसके स्वरूप में आई विकृति को उन्होंने उचित नहीं माना है। उनका स्पष्ट मत है कि मानव संस्थाओं का पतन होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और जाति व्यवस्था भी इसमें अपवाद नहीं है।

अपने वर्तमान स्वरूप में जाति व्यवस्था भी विकृत रूप में है। आध्यात्मिकता जो इसकी अनिवार्य पात्रता थी आज इसके निर्धारण का मापदण्ड नहीं रह गई है। जाति अब केवल भौतिक आधार, व्यवसाय एवं जन्म के आधार पर निर्धारित होने लगी है। वस्तुतः यह परिवर्तन उसे हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांत आध्यात्मिकता से दूर कर देता है। यह भौतिकतावाद के क्षुद्र जाल में जकड़ गई है। इसका वास्तविक स्वरूप लुप्त हो गया है। जातीय–अहंकार तथा अलगाव की प्रवृत्ति हावी हो गई है। इसकी पहचान अब कर्तव्य पालन न होकर

जो भी हो, हिन्दुओं को जाति प्रथा को अपने विरुद्ध शर्मनाक तरीके से शोषण के हथियार के रूप में प्रयुक्त करने की अनुमति किसी को भी नहीं देनी चाहिये। गत दो शताब्दियों से मिशनरियों, कथित धर्मनिरपेक्ष बुद्धिजीवियों, मुसलमानों एवं भारत की आजादी से पूर्व एवं पश्चातवर्ती राजनेताओं के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इसको राजनैतिक खेल के रूप में खेलने की प्रवृत्ति पर तो अंकुश लगना ही चाहिये।

जातीय श्रेष्ठता–हीनता रह गई है। समाज के विभिन्न वर्ग एक दूसरे से कटने लगे हैं। गैर हिन्दू धर्मावलम्बी इसका लाभ उठाकर इन्हें सनातन धर्म के विरुद्ध उकसा कर अपनी ओर आकर्षित करने लगे हैं। मतान्तरण के सुनियोजित प्रयास हो रहे हैं। इससे समाज निर्बल हो गया है। हमारी वर्तमान अवस्था इस विकृति का ही परिणाम है।

सेकुलरों पर अंकुश लगायें

लेकिन अंततः अब विचारणीय है कि वे लोग जो जाति व्यवस्था में द्रविड़ों पर आर्यों के द्वारा थोपी गई व्यवस्था या अमानवीय नाजीवाद का स्वरूप ढूंढते हैं, ने क्या इसके वास्तविक उद्देश्य एवं प्रकृति को जानने का प्रयास किया है? क्या आप इसे एकदम नकार सकते हैं? जबकि अभी भी यह भारत के आम नागरिक के दिल और दिमाग में गहरे से बैठी हुई है। भारत के ग्रामीण अंचल में तो इसे नकारना और भी दुष्कर है। इतना ही नहीं शहरी एवं पढ़े लिखे सुशिक्षित लोग भी अपना वैवाहिक सम्बन्ध ज्योतिषियों के परामर्श से बनाना उचित समझते हैं। पर यह प्रश्न आज के तर्कप्रधान युग में निश्चय ही विचारणीय है कि क्या अब इस जाति व्यवस्था में इसकी मौलिक उदात्तता लाने की आवश्यकता नहीं है? या फिर इसे आधुनिक समाज की जरूरत को देखते हुए नये स्वरूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिये। या अन्ततः अंतिम रूप से यह भारतीय समाज से अदृश्य हो जायेगी, क्योंकि आज इसकी कोई प्रासंगिकता नहीं रह गई है? जो भी हो, हिन्दुओं को जाति प्रथा को अपने विरुद्ध शर्मनाक तरीके शोषण के हथियार के रूप में प्रयुक्त करने की अनुमति किसी को भी नहीं देनी चाहिये। गत दो शताब्दियों से मिशनरियों, कथित सेकुलर बुद्धिजीवियों, मुसलमानों एवं भारत की आजादी से पूर्व एवं पश्चातवर्ती राजनेताओं के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इसको राजनैतिक खेल के रूप में खेलने की प्रवृत्ति पर तो अंकुश लगना ही चाहिये। (क्रमशः)

– हरिशंकर भारद्वाज

पंचांग– मार्गशीर्ष (शुक्ल पक्ष)

युगाब्द–५११९, विक्रमी–२०७४, शाके–१९३९

(१९ नवम्बर से ३ दिसम्बर २०१७ तक)

चतुर्थी – २२ नवम्बर, **श्रीराम–जानकी विवाह पंचमी**– २३ नव., **स्कन्ध षष्ठी** – २४ नव., **पंचक** – २५ नव. (रात.२.०१) से ३० नव. (सायं ४.१३) तक, **महानन्दा नवमी** – २८ नव., **मोक्षदा एकादशी** – ३० नव., **प्रदोष** – १ दिसम्बर, **सत्यपूर्णिमा, रोहिणी व्रत** – ३ दिसम्बर

चन्द्रमा – १९–२० नवम्बर नीच की राशि **वृश्चिक** में, २१ से २३ नव. **धनु** २४–२५ नव. **मकर**, २६ से २८ नव. **कुंभ**, २९–३० नव. **मीन** १–२ दिसम्बर **मेष** तथा ३ दिसम्बर को उच्च की राशि **वृष** में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में **शनि, सूर्य** व **गुरु** क्रमशः धनु, वृश्चिक व तुला राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी पूर्ववत कर्क व मकर में रहेंगे। **मंगल** ३० नवम्बर को प्रातः ५.२१ बजे कन्या से तुला में प्रवेश करेंगे। **बुध** २४ नवम्बर को दिन में २.०५ बजे वृश्चिक से धनु में प्रवेश करेंगे तथा **शुक्र** २६ नवम्बर रात १०.०८ बजे तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे।

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश और संस्कृति के बारे में आप कितना जानते हैं?

१. अशोक वाटिका में माता सीता को ढाढस बंधाने वाली राक्षसी कौन थी?

२. महाभारत काल में हस्तिनापुर के पास से कौन सी नदी बहती थी?

३. हॉलैण्ड (नीदरलैण्ड) के किस नगर का नाम प्राचीन काल में अन्तर्धाम था?

४. देवी का एक शक्तिपीठ मेघालय की जयन्तिया पहाड़ियों में भी है, वह कौन सा शक्तिपीठ है?

५. किस महापुरुष के देवलोक गमन के बाद कलियुग प्रारम्भ हुआ?

६. आज से छह सौ साल पहले भारत का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य कौन सा था?

७. अरब का विद्वान अल–खोआरिजमी ईसा की नवीं शताब्दी में भारत क्यों आया था?

८. मंगल पाण्डे से पहले किस भारतीय सैनिक ने अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र उठाये और शहादत पाई?

९. मुगल अकबर से चित्तौड़ की रक्षा के लिये महाराणा उदयसिंह ने मेड़ता के किस महावीर को बुलवाया?

१०. किस देश के प्रधानमंत्री ने दीपावली को हिन्दू संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रतीक बताया ।

(उत्तर इसी अंक में है)

माँ और मातृभूमि

बाल मित्रों! बात उस समय की है जब आजादी के लिए देश में अनेक आंदोलन हो रहे थे। नमक सत्याग्रह भी उनमें से एक था। उस दौरान बड़ी संख्या में लोग जेलों में भरे जा रहे थे। पुलिस सत्याग्रहियों को नाना प्रकार के कष्ट दे रही थी। अंग्रेज सरकार की दमनकारी नीति आंदोलनकारियों का उत्साह कमजोर करने में असमर्थ सिद्ध हो रही थी।

उन्हीं दिनों कुछ विद्वान रवीन्द्रनाथ ठाकुर से मिलने गए। थोड़े समय के लिए इधर-उधर बातचीत करने के पश्चात् चर्चा शीघ्र ही तत्कालीन राजनीति की ओर मुड़ गई। विद्वान बन्धुओं का मत था कि 'राष्ट्रभक्ति एक संकुचित विचार है। यह धरती तो निर्जीव है। मनुष्य का शरीर नष्ट होने वाला है। भूमि के लिए संघर्ष करना उचित नहीं है। नमक आन्दोलन का कोई औचित्य नहीं है।'

वे बोलते ही जा रहे थे और विश्वकवि मौन रहकर सुन रहे थे। अकस्मात् उनका मौन भंग हुआ। बोलने वालों में निखिल बाबू अग्रणी थे। उन्हें नाम से सम्बोधित कर ठाकुर बोले- क्या आपकी माताजी जीवित हैं?'' हाँ, प्रभु की कृपा है'' तो आप एक काम कीजिएगा। अपनी माता का सिर काटकर यहाँ ले आएं।'' रवीन्द्र बाबू ने बड़ी सरलता तथा निस्संकोच भाव से यह बात कह दी। माता का सिर काटने की बात सुन कर निखिल बाबू के चेहरे का रंग ही उड़ चुका था।

आश्चर्यचकित होकर उन्होंने पूछा-'' गुरुदेव! यह आप ने क्या कह दिया।'' निखिल बाबू अब क्रोध में आ गए थे। आवेश में आकर कहने लगे-'' क्या आपने मुझे इतना नीच समझ लिया कि मैं अपनी माँ का सिर काट लूँगा? सिर काटना तो दूर, यदि किसी ने मेरी माँ की ओर गलत दृष्टि से देखा या हाथ भी बढ़ाया तो मैं उसका ही सिर काट दूंगा। अपनी माँ के हत्यारे को कौन छोड़ेगा? जिसने हमें जन्म दिया, हमारा पालन-पोषण किया, बड़ा किया, उसका अहित होते भला हम कैसे देख सकते हैं?''

गुरुदेव मुस्कराए और समझाने लगे-''ये सत्याग्रही भी अपनी माँ पर ऐसी ही श्रद्धा रखते हैं जैसे आप अपनी जननी पर रखते हैं। परन्तु स्मरण रखिए कि भारत भूमि हम सब की माँ है। इसके अन्न और जल से हमारा शरीर पुष्ट हुआ है। हमारे एक-एक श्वास पर इसका अधिकार है। यह हमारी माँ की भी माँ है। माँ दासता की बेड़ियों में रहे, क्या हम यह सहन कर सकते हैं?''

सारी स्थित स्पष्ट हो चुकी थी और निखिल बाबू और उनके साथी मातृभूमि के महत्व को भली प्रकार से समझ गए थे। वे श्रद्धा से गुरुदेव के चरणों में झुक गए। ❑

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- प्रसिद्ध क्रांतिकारी जो कभी अंग्रेज सरकार की पकड़ में नहीं आये।
- वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज पर बम प्रहार की योजना के प्रमुख सूत्रधार।
- जिन्होंने आजाद हिन्द फौज की कमान सुभाष चन्द्र बोस को सौंपी ।
- जापान सरकार ने उन्हें 'आर्डर ऑफ द राइजिंग सन' के सम्मान से अलंकृत किया।

(उत्तर इसी अंक में है)

बाल-प्रश्नोत्तरी

१. बाली की पत्नी कौन थी?
(अ) तारा (ब) रूमा (स) मंदोदरी (द) त्रिजटा

२. माता सीता की खोज में लंका जाते समय हनुमान जी से विश्राम करने की प्रार्थना किस पर्वत ने की?
(अ) विध्यंगिरि (ब) नीलगिरि (स) मैनाक (द) सप्तगिरि

३. रावण ने माता सीता का अपहरण कर उन्हें लंका में कहाँ रखा?
(अ)नंदनवन (ब) दण्डकवन (स) अशोक वाटिका (द) पंचवटी

४. सुरसा को देवताओं ने हनुमान जी के मार्ग में क्यों भेजा?
(अ) परीक्षा लेने के लिए (ब) आतिथ्य के लिए
(स) उन्हें भयभीत करने (द) उनकी मदद करने

५. अशोक वाटिका में माता सीता का मनोबल किस राक्षसी ने बढ़ाया?
(अ) मंदोदरी (ब) त्रिजटा (स) ताड़का (द) शूपर्णखा

६. किस राक्षस ने हनुमान जी पर ब्रह्मपाश चलाया?
(अ) मेघनाद (ब) अक्षयकुमार (स) कुम्भकर्ण (द) रावण

७. लंका में हनुमान जी ने किस बगीचे को उजाड़ दिया?
(अ) नन्दन कानन (ब) मधु वन
(स) अशोक वाटिका (द) स्मृति वाटिका

८. विभीषण के घर कौन सा पौधा देखकर हनुमान हर्षित हुये?
(अ) चंदन (ब) आंवला (स) तुलसी (द) पीपल

९. भगवान श्रीराम की सेना के सागर तट पर पहुँचने पर सीताजी को लौटाने की सलाह रावण को सबसे पहले किसने दी?
(अ) मंदोदरी (ब) माल्यवंत (स) विभीषण (द) मेघनाथ

१०. माल्यवंत रावण के राज्य में किस पद पर थे?
(अ) सेनापति (ब) सचिव (स) गुप्तचर (द) न्यायाधीश

(उत्तर इसी अंक में हैं)

अब न्यूयार्क में लोगों को ट्रक से कुचला गया

हमारे पुराणों में ऐसे ही दुष्कर्म करने वालों को राक्षस कहा गया जैसे कृत्य इन दिनों आतंकी कर रहे हैं। 'दाएश' (इस्लामिक स्टेट) तालिबान, बोको हरम आदि गिरोहों के आतंकियों का नया शस्त्र है निरपराध लोगों पर ट्रक जैसे भारी वाहन चढ़ा देना। वर्ष २०१७ में यूरोप के विभिन्न नगरों में पाँच ऐसे हमले हो चुके हैं।

छठा हमला बीते ३१ अक्तू. को न्यूयार्क में हुआ। मेनहट्टन (न्यूयार्क) में हडसन नदी के किनारे जमा भीड़ पर सेफुल्लो साइपोव नाम के व्यक्ति ने ट्रक चढ़ा दी। इस हमले में आठ लोग मारे गये तथा एक दर्जन घायल हो गये। बाद में पुलिस ने इस आतंकी को मार गिराया। मरने से पहले उसने 'अल्ला-हू-अकबर' का नारा लगाया। हमले के बाद दाएश ने सेफुल्लो का अपना कमाण्डो बताया।

न्यूयार्क के मेनहट्टन में यह राक्षसी कृत्य उस समय हुआ जब जनता हेलोवीन दिवस मना रही थी। यह दिवस हर साल ३१ अक्तूबर को मनाया जाता है। यह गर्मी समाप्त होने का प्रतीक है। फसलों के तैयार हो कर घर में आ जाने की खुशी में भी यह मनाया जाता हैं। इस दिन लोग तरह-तरह का स्वांग बना कर सड़कों पर घूमते हैं।

गरीबों की चिन्ता में करोड़पति बन गये नक्सली

नक्सलवादी भारत के सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ का हिस्सा हैं और पूरे गठजोड़ की तरह घोर पाखण्डी हैं। भारत राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा के कारण देश-द्रोही तो वे हैं ही। नक्सली और उनके भाई-बन्द वनवासियों के शोषण, उनकी दयनीय स्थिति, उन पर अत्याचार आदि की बातें खूब बघारते हैं किन्तु वनवासियों के सब प्रकार के शोषण में वे सबसे आगे हैं। गरीब वनवासियों की चिन्ता में नक्सली सरगना करोड़पति बन गये हैं।

दैनिक टाइम्स ऑफ इण्डिया (१६अक्तू.) में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार बिहार-झारखण्ड के दो माओवादी नेता संदीप यादव तथा प्रद्युम्न शर्मा करोड़ों के मालिक हैं तथा उनके बाल-बच्चे शाही जीवन व्यतीत करते हैं। सारी सम्पत्ति वनवासियों से उगाही कर बनाई गई है। इन माओवादियों के बच्चे ऐसे संस्थाओं में पढ़ते हैं जिनकी ओर सामान्य व्यक्ति देख भी नहीं सकता। मँहगी और आधुनिकतम गाड़ियों में ये बच्चे उक्त संस्थानों में पढ़ने जाते हैं।

आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों ने भी इन सरगनाओं पर ऐसे ही आरोप लगाये हैं। जबर्दस्त भ्रष्टाचार और देह-शोषण के भी ढेरों उदाहरण सामने आये हैं।

वे दिन में रुई बाँटते हैं और वे रात में दिये जलाते हैं

भारत में रहने वाले अधिकांश मुस्लिम बन्धुओं के पुरखे हिन्दू ही हैं। कुछ पीढ़ियों पहले किसी ने विषम परिस्थितियों में इस्लाम अपनाया होगा, किन्तु वे पहले हिन्दू ही थे। कट्टरपंथी मौलानाओं के बहकावे में आकर उन्होंने हिन्दू परम्पराओं का त्याग कर दिया। फिर भी ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है। जिन्होंने अपने पूर्वजों से प्राप्त संस्कारों को छोड़ा नहीं है। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में एक गाँव ***गजरौला शिव*** *है। यहाँ हिन्दू और मुसलमान बराबर की संख्या में है। यहाँ के मुस्लिम बन्धुओं में हिन्दू परम्परा के प्रति अभी भी सम्मान है। दीवाली का पर्व ये भी बड़े उत्साह से मनाते हैं। एक और विशेषता इस गाँव की है। दिन में सभी मुस्लिम बालक अपने घर से रुई लाकर हिन्दुओं के घरों में बाँटते हैं। इस रुई से रात में जलाये जाने वाले दियों की बाती बनाई जाती है। रात के समय हिन्दू परिवारों के बालक मुस्लिम घरों में जाकर दीपक जलाते हैं और सुख-समृद्धि की शुभकामना देते हैं।*

देखा जाये तो दिवाली का सम्बन्ध रिलीजन से है भी नहीं। यह तो राष्ट्रीय पर्व है। राष्ट्रनायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के अयोध्या वापस आने की खुशी में किया जाने वाला उत्सव है। इसलिये ये पूरे देशवासियों का पर्व है।

इस गाँव के सारे ग्रामवासी एक जनवरी को जन्मे!

आधार कार्ड बनवाने में भी किस प्रकार की जालसाजी की गई है, इसका उदाहरण गत दिनों उत्तराखण्ड में सामने आया। हरिद्वार से बीस कि.मी. की दूरी पर गैंदीखाटा गाँव है जिसमें आठ सौ परिवार रहते हैं। सबके सब ने आधार कार्ड भी बनवा लिये हैं। आश्चर्य की बात यह है कि सभी की जन्मतिथि एक जनवरी ही लिखी हुई है। वर्ष जरूर अलग-अलग हैं किन्तु सब के सब जन्मे एक जनवरी को ही हैं। एक परिवार अलफदीन का है, उसके परिवार के सब लोगों की जन्मतिथि १ जन. ही बताई गई है। उसके आस-पास रहने वाले चाचा-ताऊ, बुआ-भतीजे सबके सब पहली जनवरी को ही जन्मे बताये गये हैं। 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' (२७ अक्तू.) के अनुसार गाँव के अधिकांश लोगों की जन्म-तिथि आधार-कार्ड के अनुसार १ जन. ही है।

जैसी जालसाजी गैंदीखाटा में की गई है उसी का सहारा लेकर बांग्लादेशी घुसपैठियों ने भी 'आधार' बनवा लिये हैं। चिन्ताजनक बात यह है कि कई उत्पाती रोहिंग्या भी यह पहचान-पत्र बनवाने में सफल हो गये हैं।

ज्योतिष भी विज्ञान है- हाईकोर्ट

मुम्बई उच्च न्यायालय ने गत २ नव. को एक निर्णय में कहा है कि विज्ञान की अन्य विधाओं की तरह ज्योतिष भी एक विज्ञान है। एक भारत-द्वेषी ने उच्च न्यायालय में एक याचिका लगाई थी जिसमें ज्योतिष, वास्तु आदि पर रोक लगाने की माँग की गई थी। इस याचिका को निरस्त करते हुए न्यायालय की खण्डपीठ ने कहा, कि सर्वोच्च न्यायालय वर्ष २००४ के एक फैसले में ज्योतिष को पूर्ण विज्ञान मान चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने देश के शिक्षण संस्थाओं को ज्योतिष को पाठ्य-क्रम में सम्मिलित करने की सलाह भी उक्त निर्णय में दी थी। मुख्य न्यायाधीश श्री मोहित शाह तथा न्यायमूर्ति वजीफदार की खण्ड-पीठ ने यह भी कहा कि ज्योतिष कम से कम चार हजार वर्ष प्राचीन तथा निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित विज्ञान है।

तुष्टीकरण के लिये हिन्दू-आतंक का षड़यंत्र रचा गया

जमानत पर छूटे एक निर्दोष की आप-बीती

हिन्दू समाज और 'हिन्दुत्व' को बदनाम करने के लिये सेकुलरवादी कैसे-कैसे षड़यंत्र करते हैं, इसकी जानकारी धीरे-धीरे होने लगी है। हिन्दुत्व पर कीचड़ उछालने का प्रमुख उद्देश्य तो मुसलमानों के एक-मुश्त वोट प्राप्त करना है, लेकिन साथ ही इसमें अन्तर्राष्ट्रीय ताकतों की भी भूमिका है। कतिपय विदेशी ताकतों के दबाव में **'हिन्दू-आतंक'** शब्द गढ़ा गया और उसके लिए जाली सबूत भी जुटाये गये। हाल ही में जमानत पर छूटे सुधाकर चतुर्वेदी ने पिछली संप्रग सरकार के कारनामों का खुलासा किया है।

८ सित.२००६ को नासिक जिले के मालेगाँव में सिलसिलेवार बम धमाके हुए थे। इन धमाकों के आरोप में कुछ मुस्लिम कट्टरपंथियों को पकड़ा गया और उन पर मुकदमा शुरु हो गया। दो साल बाद २९ सित.२००८ के दिन मालेगाँव में ही फिर एक बम धमाका हुआ जिसमें सात लोग मारे गये। इसके बाद 'हिन्दू आतंक' का शोर मचाने का षड़यंत्र रचा गया और अक्तूबर में कर्नल पुरोहित तथा साध्वी प्रज्ञा ठाकुर सहित कई निर्दोष लोगों को महाराष्ट्र के आतंकरोधी दस्ते(ए टी एस) ने गिरफ्तार कर लिया। इसमें देवलाली (नासिक) के सुधाकर चतुर्वेदी भी थे। बाद में स्वामी असीमानन्द जी को भी बन्दी बना लिया गया। नौ साल जेल में बिताने के बाद अब लगभग सभी निर्दोषों को जमानत पर छोड़ दिया गया है। दिवाली के पहले रिहा हुए सुधाकर चतुर्वेदी ने पत्रकारों को बताया कि तत्कालीन सरकार ने हिन्दुत्व और राष्ट्रवादी नेताओं को कलंकित करने का जी-तोड़ प्रयत्न किया था।

कर्नल पुरोहित तथा साध्वी प्रज्ञा सहित सभी बन्दी निर्दोषों को ऐसी यातनाएं दी गईं जो कल्पना से भी बाहर हैं। सरसंघचालक भागवत जी तथा योगी आदित्यनाथ का धमाकों में हाथ होने का बयान देने के लिए इन पर जबर्दस्त दबाव डाला गाया। सुधाकर के देवलाली स्थित घर पर ए टी एस के षड़यंत्रकारियों ने विस्फोटक रख दिये। बाद में प्राथमिकी में घर पर विस्फोट मिलने का आरोप भी जड़ दिया गया। उनके पास से पिस्तौल बरामद होने का झूठा आरोप भी मढ़ा गया। दस दिनों तक भीषण यातनायें देने के बाद २९ अक्तू. २००८ के दिन उनको गिरफ्तार दिखाया गया।

लाक्षागृह की खोज करेगा पुरातत्व विभाग

महाभारत में पाण्डवों को लाक्षागृह में जला कर मार देने के षड़यंत्र की जानकारी सभी देशवासियों को है। हस्तिनापुर के महामंत्री विदुर के चेताने के बाद पाण्डव सकुशल लाक्षागृह से निकल गये थे।

इतिहासकारों का मानना है कि उक्त लाख का बना महल उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में बरणावा ग्राम में था और उसके अवशेष भूमि में दबे हुए हैं। वहाँ उत्खनन कर लाक्षागृह को निकालने के लिये लम्बे समय से भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग से अनुरोध किया जा रहा था। अब विभाग ने खुदाई की स्वीकृति दे दी है। कौरवों का बनाया लाख का घर वारणावत में था। इतिहास के विद्वानों का मानना है कि वही वारणावत अब बदल कर बरणावा हो गया है।

अपने देश में महाभारत,रामायण एवं अन्य कालों से जुड़े अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं। इनमें से बहुत से जमीन के नीचे दबे हैं। ऐसे सभी स्थलों की पहचान व उत्खनन किया जाना चाहिये।

नासा ने बताया कि सूर्य से निकलती है ओंकार की ध्वनि

सूर्य से प्रकाश के अतिरिक्त ध्वनि भी प्रसारित होती है। यह आवाज इतनी मन्द होती है कि पृथ्वी तक पहुँच ही नहीं पाती। पिछले दिनों अमरीका के अंतरिक्ष संस्थान 'नासा' ने सूर्य से प्रसारित होने वाली ध्वनि को पकड़ने का प्रयत्न किया। नासा के वैज्ञानिको को उस समय घोर आश्चर्य हुआ जब उन्हें पता लगा कि सूर्य से लगातार ''ॐ'' की ध्वनि निकल रही है।

भारत में ओंकार को बीज-मंत्र और अनहद नाद माना जाता है। हजारों वर्षों से भारतीय साधक और वैज्ञानिक ''ॐ'' की साधना करते आये हैं। सहस्रों वर्ष पहले उन्होंने सूर्य की ध्वनि को कैसे सुना होगा यह भी आश्चर्य का विषय है।

नोबल विजेता गंगा को देख कर अभिभूत हो गये

गंगा एक अद्भुत नदी है। दुनिया की किसी और नदी में ऐसी विशेषतायें नहीं हैं जैसी गंगा में हैं। भारतवासियों के लिये तो यह माँ-गंगा है और अन्य अनेक देशों में भी इस पुण्य-सलिला के प्रति ऐसी ही श्रद्धा है। काशी में तो गंगा का रूप अवर्णनीय हो जाता है। इसीलिये देश-विदेश के लाखों लोग हर साल काशी में यात्रा करते हैं।

पिछले दिनों रसायन-शास्त्र में इस वर्ष का नोबुल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रो. जोकिम फ्रेंक भारत आये थे। गत ३ नवम्बर को काशी की प्रसिद्धि सुन कर वे बाबा विश्वनाथ की इस नगरी में पहुँच गये। दूसरे दिन प्रातःकाल में अस्सी घाट पहुँचे और एक नाव में सवार हो गंगा का आनन्द लेने लगे। बाद में उन्होंने पत्रकारों के बताया कि प्रातः काल का दृश्य अद्भुत था, चकित कर देने वाला था। उनकी पत्नी ने कहा कि अस्सी घाट के अनुभव और आनन्द को शब्दों में नहीं बताया जा सकता।

लोकप्रियता के शिखर पर पहुँची कबड्डी

कबड्डी विशुद्ध रूप से भारतीय खेल है। भारत में ही ऐसे खेल विकसित हुए जिनको साधनहीन एवं निर्धन व्यक्ति भी खेल सकें। कबड्डी, खो-खो आदि सभी खेल ऐसे हैं जिनके लिये एक-मात्र आवश्यकता जमीन के एक आयताकार टुकड़े की होती है जो गाँव-गाँव में आसानी से उपलब्ध हैं। कबड्डी तो पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर भी आधारित है। हमारे ये सभी खेल ऐसे हैं जिनमें शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक क्षमताओं का पूरा विकास होता है।

क्रिकेट की आँधी ने हमारी मिट्टी से जुड़े खेलों सहित फुटबाल, हॉकी, वॉलीबाल आदि को भी पीछे धकेल दिया। संघ की शाखाओं ने खो-खो और कबड्डी को जीवित रखा। कबड्डी फेडरेशन ने भी कबड्डी को प्रासंगिक बनाये रखा। कबड्डी को फिर से ऊँचाइयों तक पहुँचाने का पहला प्रयास २०१२ में हुआ जब आठ टीमों के बीच विजयवाड़ा में **कबड्डी प्रीमियर लीग** प्रतियोगिता हुई। यह ८ से १६ जून तक कुल मिलाकर नौ दिन चली। २०१४ में **प्रो कबड्डी लीग** शुरू हुई जो पाँच सप्ताह तक चली। इसमें भी आठ दल थे, जिनमें भारत व अन्य देशों के नामी खिलाड़ी खेले।

इस लीग के चार संस्करणों तक टीमें आठ ही रही किन्तु इस बार प्रो कबड्डी के पाँचवें संस्करण में टीम भी बारह हो गईं तथा मुकाबलों की संख्या भी दो गुनी से अधिक हो गई। भारत के बाहर लगभग १२० देशों में दूरदर्शन पर सभी मुकाबले दिखाये गये। इस पंचम संस्करण ने कबड्डी को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचा दिया। पूरे तीन महीने तक चली इस लीग में शानदार कबड्डी देखने को मिली। पटना पायरेट्स की प्रदीप नरवाल की अगुवाई वाली टीम ने लगातार तीसरी बार विजेता की ट्राफी पर कब्जा किया।

पी.के.एल.-५ में बारह दलों के मुकाबलों के अतिरिक्त स्कूली बालकों की प्रतियोगिता भी हुई। जयपुर सहित बारह नगरों के स्कूलों ने इसमें सहभागिता की।

एक मन्दिर जो साल में मात्र चार दिन खुलता है

अपने देश में एक अनोखा मन्दिर ऐसा भी है जो वर्ष में केवल चार दिन धन-तेरस के अवसर पर खुलता है। यह मन्दिर शिव-शंकर की नगरी काशी में है तथा अन्नपूर्णा मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर में अन्नपूर्णा माता की दो प्रतिमाएं हैं, एक सोने की तथा दूसरी पीतल की। माता के पीतल के विग्रह के दर्शन तो प्रतिदिन होते हैं किन्तु सोने के विग्रह के दर्शन केवल धनतेरस से गोवर्धन पूजा तक चार दिन होते हैं। इस बार धनतेरस १७ अक्तूबर को थी। अतः माता के दर्शनों के लिये एक दिन पहले से ही कोई दो कि.मी. लम्बी लाइन लग गई।

धनतेरस को मन्दिर का जब स्वर्ण-विग्रह वाला भाग खोला गया तो श्रद्धालुओं में माता का खजाना भी बांटा गया। खजाने में वर्ष भर एकत्र हुई सामग्री के अतिरिक्त नये धान की बालियाँ भी होती हैं।

डाक विभाग ने राम-कथा पर डाक टिकिट जारी किये

भारतीय डाक विभाग ने श्रीराम-कथा के प्रसंगों पर गत दिनों डाक-टिकिट जारी किये। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने काशी (वाराणसी) में इन ग्यारह टिकिटों को विधिवत जारी किया। स्वतंत्र भारत में पहली बार रामायण के प्रसंगों पर डाक-टिकिट निकाले गये हैं। दस टिकिट पाँच रु. मूल्य के हैं तथा एक १५रु. का है। शेष दस टिकिटों में सेतु-निर्माण, अशोक वाटिका में हनुमान जी द्वारा माता सीता की खोज, शबरी के बेर, केवट प्रसंग,संजीवनी लाते बजरंगबली आदि प्रसंग हैं।

योग सिखाने पर राफिया को धमकाया जिहादियों ने

सारी दुनिया योग को अपना रही है। खाड़ी के मुस्लिम देशों में भी इसे हाथों-हाथ लिया जा रहा है। एक भारत ही है जहाँ के कूप-मण्डूक कट्टरपंथी योग के विरोधी हैं। सेकुलर-बिरादरी के दम पर ये जिहादी मनमानी कर रहे हैं। कोई मुस्लिम योगाभ्यास करने या अन्यों को सिखाने की कोशिश करता है तो देवबंद के मौलाना उसे मार देने का फतवा दे देते हैं। इसी के साथ जिहादी उसके पीछे पड़ जाते हैं। झारखण्ड की राजधानी रांची की राफिया नाज योग-शिक्षिका है। वे स्थानीय मारवाड़ी कॉलेज से एम.कॉम कर रही हैं। उन्हें योग करने व कराने के लिये अनेक पुरस्कार भी मिल चुके हैं। पर अब मुस्लिम कट्टरपंथी उन्हें जान से मार देने की धमकी दे रहे हैं। राँची के पुलिस अधीक्षक श्री कुलदीप द्विवेदी ने गत ८ नव. को पत्रकारों को उक्त जानकारी देते हुए बताया कि राफिया को पुलिस की ओर से चौबीसों घण्टे के लिए दो अंगरक्षक दे दिये गये हैं।

उत्तर महापुरुष पहचानो - रास बिहारी बोस

शीत ऋतु में स्वास्थ्य की रक्षा कैसे करें

उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से हितकर व उपयोगी समय शीतकाल का होता है। सर्दी के मौसम में रोग–प्रतिरोधात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है। शीत ऋतु में जठराग्नि अत्यधिक प्रबल रहती है। अतः इस समय लिया गया पौष्टिक और बलवर्धक आहार वर्षभर शरीर को तेज, बल और पुष्टि प्रदान करता है। इस ऋतु में व्यक्ति को अपने स्वास्थ–वर्द्धन के लिए किस प्रकार का आहार–विहार करना चाहिए, शरीर की रक्षा कैसे करनी चाहिए ? यह समझना जरूरी है।

– पौष्टिकता से भरपूर, गरिष्ठ और घी से बने पदार्थों का सेवन इस समय अच्छा रहता है।

– दूध, घी, मक्खन, गुड़, खजूर, तिल, खोपरा, सूखा मेवा, उड़दपाक, सोंठपाक तथा अन्य पौष्टिक पदार्थ इस ऋतु में सेवन योग्य माने जाते हैं।

– इस ऋतु में ताजा जल से स्नान करना चाहिए। बड़ी आयु के लोग गर्म पानी का प्रयोग करें। जिनके हाथ–पैर फट जाते हों वे हाथ या पैर धोने में गुनगुने पानी का प्रयोग करें तो हितकारी होगा।

– प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठना,प्रातः भ्रमण,योगासन, सूर्य नमस्कार, तेल मालिश, एवं प्रातःकाल सूर्य की किरणों का सेवन इस ऋतु में लाभदायक रहता है।

– दशमूलारिष्ट, लोहासव, अश्वगंधारिष्ट अथवा अश्वगंधावलेह तथा च्यवनप्राश जैसी आयुर्वेदिक औषधियों का इस काल में सेवन करने से वर्षभर के लिए पर्याप्त शक्ति का संचय किया जा सकता है।

इस बदलती ऋतु में सर्दी, खाँसी, जुकाम या कभी बुखार की संभावना भी बनी रहती है, जिनसे बचने के उपाय निम्नलिखित हैं–

– भोजन के पश्चात् भुनी हुई अजवाइन में हल्दी–नमक मिला कर नित्य सेवन करने से सर्दी–खाँसी मिट जाती है।

– अजवाइन को तवे पर गर्म करके उसका धुआँ नाक से लेना चाहिए। गर्म अजवाइन की पोटली बनाकर उससे छाती की सिकाई करने पर आराम मिलता है। इस दौरान मिठाई, खटाई और चिकनाई युक्त चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए।

– चौथाई चम्मच पिसी सोंठ, आधा चम्मच दालचीनी तथा थोड़ा पुराना गुड़, इन तीनों को एक कटोरी में गरम करके मिला लें। खाली पेट रोजाना लेने से सर्दी मिटती है।

– सर्दी–जुकाम और खाँसी के स्थायी मरीज को थोड़ी सोंठ, एक छोटी डली गुड़ और थोड़ा घी एक कटोरी में लेकर उतनी देर तक गरम करना चाहिए जब तक गुड़ पिघल न जाये। फिर सबको मिलाकर रोज सुबह खाली पेट गरम–गरम खा लें। भोजन में मीठी, खट्टी, चिकनी और गरिष्ठ वस्तुएँ न लें। इस प्रयोग से यह रोग मिट जायेगा।

– सर्दी के कारण होने वाले सिरदर्द, छाती के दर्द और बेचैनी में एक चम्मच सोंठ का चूर्ण शहद में मिलाकर रोज चाटने से लाभ होता है।

– भोजन में मूँग, बाजरा, मेथी और लहसुन का प्रयोग करें। इससे भी सर्दी मिटती है तथा ये स्वास्थ्यवर्द्धक भी हैं।

– आधा चम्मच सितोपलादि चूर्ण शहद के साथ दिन में दो बार लेने से पुरानी खाँसी में भी आराम मिलता है।

जाल में फँसा मुसलमान बनाया, शादी की और फिर अफगानिस्तान भेज दिया

'लव–जिहाद' के मामले देश में बढ़ते ही जा रहे हैं। भोली–भाली कन्याएं जिहादियों के जाल में फँस कर मुसलमान बन रही हैं। इसके बाद निकाह कर के वे ऐसे नर्क में पहुँच रही हैं जहाँ से निकलना अत्यंत कठिन है। इसलिये कि तब तक इतनी देर हो चुकी होती है कि बचने का कोई रास्ता ही नहीं रह जाता।

ताजा मामला भी केरल का है जहाँ लव–जिहाद की छान–बीन करने का काम उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय अन्वेषण एजेंसी (एनआईए) को सौंप रखा है। केरल की निमिषा के पिता नहीं है। उसका बड़ा भाई भारतीय सेना में है। माँ ने मेहनत कर के दोनों बच्चों को योग्य बनाया। निमिषा जब मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिये कोचिंग ले रही थी, तो उस के साथ पढ़ रहे सज्जाद ने उसे अपने जाल में फँसा लिया। निमिषा को दंत चिकित्सा में प्रवेश मिल गया। उधर सज्जाद पांडिचेरी के एक निजी मेडिकल कॉलेज में भर्ती हो गया। उसने निमिषा को गर्भवती कर तथा उसका भयादोहन कर उसे मुसलमान बना लिया और निकाह कर तलाक भी दे दिया। जिहादियों ने फातिमा बनी निमिषा का एक दूसरे व्यक्ति ईशा से निकाह कर दिया। तत्पश्चात जिहादियों ने दांतों की डाक्टर बनने का सपना देख रही निमिषा को अफगानिस्तान में 'दाएश' के ठिकाने पर भेज दिया।

इस समय बेचारी निमिषा खुरासान में इस्लामिक स्टेट के दरिंदो के साथ बताई जाती है। इधर उसकी माँ न्याय के लिये सर्वोच्च न्यायालय के दरवाजे खटखटा रही है।

शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने जे.पी.सिंघल

गत २७ से २९ अक्तूबर को अमरावती में अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ की साधारण सभा की बैठक आयोजित की गई। बैठक में महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के चुनाव भी सम्पन्न हुये।

राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति जे.पी.सिंघल को आगामी तीन वर्षों के लिए महासंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। कर्नाटक के प्रो.शिवानंद सिंदनकेरा महामंत्री बने हैं।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी - १.अ, २.स ,३.स, ४.अ, ५.ब, ६.अ, ७.स, ८.स, ९.अ, १०.ब

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी– त्रिजटा, गंगा, एम्सटर्डम, देवी जयन्ती, योगेश्वर श्रीकृष्ण, विजयनगर साम्राज्य, गणित सीखने, सूबेदार जयराम, राठौड़ जयमल, इंग्लैण्ड की श्रीमती टेरेसा मे।

पचास हजार नौजवानों के कण्ठ से गूँजा 'वन्देमातरम्'

जयपुर का वातावरण गत ८ नव. के प्रातः काल उस समय देशभक्तिमय हो गया जब स्थानीय सवाईमानसिंह स्टेडियम में एक साथ ५० हजार लोगों ने एक सुर में राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' का गायन किया। सामूहिक गायन से ऐसा समां बंधा कि हर व्यक्ति में देशभक्ति का जोश उमड़ आया। स्कूल-कॉलेजों के छात्रों ने जब कार्यक्रम में तिरंगा लहराया तो सारा वातावरण राष्ट्रप्रेम के भाव से ओत-प्रोत हो गया।

'हिन्दू आध्यात्मिक सेवा फाउण्डेशन' तथा 'राजस्थान युवा बोर्ड' के संयुक्त तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समारोह में आये फिल्मी जगत की प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी कल्याण जी – आनन्द जी के वयोवृद्ध आनन्द जी के निर्देशन में करीब ३०० कलाकारों ने मन-भावन देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश प्रभु थे। इस अवसर पर रा.स्व.संघ के अ.भा.सह सेवा प्रमुख श्री गुणवंत सिंह कोठारी भी उपस्थित थे।

वंदेमातरम् के सामूहिक गायन में विशाल मंच पर ३०० संगीतकारों ने ढोल, हारमोनियम, सितार, वायलिन, गिटार, तबला समेत १२५ वाद्ययंत्रों के साथ देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियाँ देकर जयपुर में सुरों का इतिहास रचा

पाथेय कण का दीपावली स्नेह मिलन

गत २८ अक्तूबर को पाथेय कण की ओर से 'दीपावली स्नेह मिलन'आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद, राज्यसभा श्री राम कुमार वर्मा थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि भौतिकतावादी युग की दस्तक से सामाजिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। इससे जो सामाजिक विकृतियाँ घर कर गई उन्हें दूर कर समरस समाज बनाने की आवश्यकता है।

जयपुर प्रांत के सह प्रांत प्रचारक डा.शैलेन्द्र कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की चर्चा करते हुए कहा कि हिन्दू संस्कृति का आज पूरे विश्व में डंका बज रहा है, वह दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरु के स्थान पर स्थापित होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर के निदेशक श्री रमेश शर्मा ने कहा कि संस्कार किसी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ाये जाते हैं। यह परिवार और समाज से सीखे जाते हैं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पत्रकार, शिक्षक,प्रशासनिक सेवा में कार्यरत अधिकारी, मातृशक्ति तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जयपुर में सेवा भारती के नये भवन का लोकार्पण

गत ५ नवम्बर को राजस्थान की राजधानी जयपुर में सरसंघचालक भागवत जी ने सेवा भारती के नव-निर्मित भवन का लोकार्पण किया। नये भवन का नाम 'सेवा-सदन' रखा गया है।

कार्यक्रम में आये आगन्तुकों को सम्बोधित करते हुए श्री भागवत ने कहा कि सेवा का काम बोलने का नहीं करने का है। सेवा से ही समरसता का निर्माण होता है। यह भवन निश्चित रूप से सेवा भारती द्वारा जनसेवा के लिए चलाये जा रहे कार्यों के माध्यम से समाज परिवर्तन का केन्द्र बनेगा। समारोह की अध्यक्षता राजस्थान प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने की।

स्वदेशी मंच की दिल्ली में विराट रैली

स्वदेशी जागरण मंच की ओर से देश भर में चल रहे 'राष्ट्रीय स्वदेशी सुरक्षा अभियान' के अन्तर्गत गत २९ अक्तूबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक रैली हुई। इसमें बड़ी संख्या में किसानों, व्यापारियों उद्यमियों, महिलाओं, विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी कार्यकर्ता चीनी वस्तुओं के बहिष्कार करने के गगनभेदी नारों के साथ इस महारैली में शामिल हुये

रैली में आये लोगों को सम्बोधित करते हुए रा.स्व.संघ की अ.भा.कार्यकारिणी के सदस्य श्री इन्द्रेश कुमार ने कहा कि यदि हमने स्वदेशी आन्दोलन को क्रांति का स्वरूप नहीं दिया तो फिर आर्थिक आजादी का सपना पूरा होना संभव नहीं होगा। उन्होंने *'चीनी माल का बहिष्कार और स्वदेशी माल को स्वीकार'* का नारा भी दिया।

प्रदर्शन में पूरे देश से डेढ़ लाख से अधिक लोग शामिल हुए। राजस्थान प्रदेश से भी हजारों की संख्या में मंच के कार्यकर्ता इसमें शामिल हुये। मंच के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री कश्मीरी लाल, मंच के ही उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री सतीश कुमार, राष्ट्रीय संयोजक श्री अरुण ओझा सहित किसान संघ के महामंत्री बद्रीनारायण चौधरी, सेवानिवृत्त लेफ्टिनेट जनरल वी.के.चतुर्वेदी तथा पूर्व सैन्य अधिकारी जी.डी. बक्शी ने भी रैली को सम्बोधित किया।

कृषि विशेषांक महत्वपूर्ण संकलन है

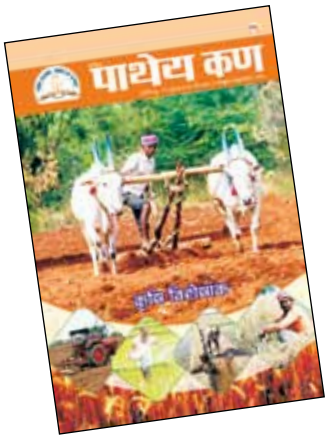

अंक संदर्भ : १ अक्तूबर २०१७

कृषि विशेषांक के मुख पृष्ठ पर बैलों द्वारा हल जोतते किसान का चित्र विशेषांक की सार्थकता सिद्ध कर रहा है।

-टेकचन्द शर्मा, *झुंझुनू*

१ अक्तूबर का 'कृषि विशेषांक' कृषि से ग्राम विकास की परिकल्पना को साकार करने के उपायों सहित अन्य लाभकारी जानकारियों का महत्वपूर्ण संकलन है।

-प्रेम शर्मा, *रजवास (टोंक)*

भारत की गौरवशाली कृषि परम्परा जिसमें वर्षा का पूर्वानुमान सम्बन्धी कहावतें जैसी अनेक जानकारी कृषि विशेषांक से प्राप्त हुई। अंक वास्तव में संग्रहणीय है।

-श्रीमती पी.जयप्रदा, *हैदराबाद*

'लोक कहावतों में कृषि विज्ञान' एवं गाँव-ढ़ाणी के मौसम वैज्ञानिक वाला लेख बहुत उपयोगी है। पढ़े-लिखे युवा किसान भी इस पर मनन कर कृषि से ज्यादा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी जानकारी के लिए पाथेय कण का आभार।

-रोशन लाल गोखरु, *कांगनी (भीलवाड़ा)*

कृषि विशेषांक में 'अग्निहोत्र की उपादेयता' लेख प्रेरक और ज्ञानवर्धक लगा। वर्तमान समय में अग्निहोत्र पद्धति को लगभग भुलाया जा चुका है। ऐसे में उक्त लेख उसकी उपादेयता को बढ़ाने में सार्थक सिद्ध होगा।

-घनश्याम रांकावत, *बोरावड़ (नागौर)*

विशेषांक में खेती की पुरानी परम्परा, प्राचीन कहावतों और खेती कब की जाए के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली। वर्तमान समय में खेती कम मेहनत और अधिक संसाधनों पर आश्रित है। गौवंश के संरक्षण संवर्धन से उन्नत कृषि की जा सकती है।

-गोपाल सैकड़ा, *दौसा*

कृषि विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण अक्सर मैं नवीन जानकारियों को पढ़ने के लिए तत्पर रहता हूँ। पाथेय कण को धन्यवाद प्रेषित करता हूँ कि कृषि विज्ञान की सम्पूर्ण जानकारी इस अंक में देकर मेरे ज्ञान में वृद्धि की।

-श्यामलाल लखारा, *बावड़ी (जोधपुर)*

भारत गांवों का देश है। यहां की बहुसंख्य आबादी कृषि पर निर्भर है। जब तक कृषि एवम् कृषकों की स्थिति नहीं सुधरेगी तब तक भारत का विकास असंभव है। पाथेय कण के कृषि विशेषांक में प्रकाशित लेख इस दिशा में कृषकों के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे।

-देवकीनन्दन शर्मा, *भगेगा (सीकर)*

१ अक्तूबर के कृषि विशेषांक में जैविक खेती के बारे में उपयोगी जानकारी पढ़ने को मिली। कीटनाशकों के धुआंधार प्रयोग से बंजर होती धरती के लिए जैविक खेती वरदान सिद्ध होगी।

-विष्णुकांत, *मालवीय नगर, जयपुर*

आज कृषि में रसायन और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि बंजर हो रही है, गौर वंश के पशुओं के गोबर और मूत्र से तैयार कीटनाशक तथा खाद ही बंजर भूमि को फिर से उर्वरक बना सकते हैं। कृषि विशेषांक में 'देश के लिये वरदान है गोपालन' लेख में इस विषय पर अच्छी जानकारी प्रकाशित की गई है।

-हरिनारायण, *चौमू (जयपुर)*

'घाघ कहे सुण भड्डरी' लेख में प्राचीन कहावतों से मौसम का पूर्वानुमान लगाना काफी रोचक लगा। इस पारंपरिक ज्ञान का प्रयोग कृषकों के लिए काफी लाभकारी सिद्ध होगा।

-भैरवराम, *उदयपुरवाटी, झुंझुनू*

गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों का कृषि कार्यों के लिए उपयोग किसानों के लिए कैसे लाभकारी सिद्ध होगा की जानकारी कृषि विशेषांक में मिली। बायोगैस और सौर ऊर्जा का प्रयोग कर किसान अपनी आमदनी बढ़ा सकेगा।

-घासीलाल, *लक्ष्मणगढ़(सीकर)*

अंक में पाठ्य सामग्री प्रभावपूर्ण व पूर्ण वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। विशेषांक के लेख पढ़कर नवीन जानकारियों से भी अवगत हुए। पाथेय कण ने यह विशेषांक निकाल कर भारतीय कृषि की प्राचीन परम्पराओं को आत्मसात करने का अवसर प्रदान किया है।

-पुष्पेन्द्र नायर, *कांकरोली, राजसमन्द*

बर्मा में रोहिंग्याओं का उत्पात

बर्मा में रोहिंग्या मुसलमानों ने करीब २०,००० बौद्धों को मार डाला। उनकी स्त्रियों से सामूहिक बलात्कार किया। उनके घर लूटे, फिर जिहाद के नाम पर बौद्ध युवतियों को फुसलाकर उन्हें मुसलमान बना जनसंख्या संतुलन बिगाड़ने का कार्य किया। इस बीच विराथु नाम के बौद्ध संत ने बर्मा के बौद्धों से अपील की कि आप कितने ही शांतिप्रिय क्यों न हों, पागल कुत्तों के साथ नहीं सो सकते। यह संदेश कारगर सिद्ध हुआ। शांतिप्रिय बौद्धों ने रोहिंग्याओं पर ऐसा करारा हमला किया कि उन्हें बर्मा छोड़कर भागना पड़ा। इस घटना से सीख लेते हुए हमें भी अपने देश को रोहिंग्या मुसलमानों से मुक्त करने का संगठित प्रयास करना चाहिए।

-श्रीमती दया वर्धिनी, *सिकन्दराबाद*

साभार - दैनिक जागरण